।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

वार्षिक शुल्क : 100/–
आजीवन : 1100/–
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या-
UP MRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द १९५
मानव सृष्टि सं.- १९६०८५३११९
सृष्टि सं.- १९७२९४९११९

वर्ष–17 | अंक–11 | भाद्र शु. 7 से आषाण कृ. 5 सं. 2075 वि. | 16 से 30 सितम्बर 2018 | अमरोहा, उ.प्र. | प्रति–5/–

टंकारा चलो

आर्यावर्त केसरी प्रबंध समिति के नेतृत्व में गतवर्षों की भांति अहमदाबाद, द्वारिका, पोरबंदर, सोमनाथपुरी व टंकारा आदि का परिभ्रमण कार्यक्रम २६ फरवरी से ०६ मार्च २०१९ तक

विस्तृत रूपरेखा पृष्ठ तीन ३ पर देखें।

-डॉ. अशोक कुमार आर्य
सम्पादक

आनन्द सुधासार
दयाकर पिला गया
भारत को दयानन्द
दुबारा जिला गया।
'शंकर' दिया बुझाय
दीवाली को देह का
कैवल्य के विशाल
बदन में विला गया।

आगामी कार्यक्रम

- ऋषि उद्यान अजमेर में भव्य ऋषि मेला, दिनांक- 16 से 18 नवम्बर 2018 तक
- भव्य संगीत संध्या, एक शाम दयानन्द के नाम दिनांक- 08 नवम्बर 2018 सायं 4 से 8 बजे, दिल्ली हॉट, पीतमपुरा, दिल्ली-34
- नवलखा महल, गुलाब बाग उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव, दिनांक- 6 से 8 अक्टूबर 2018 तक
- भोजपुर खेड़ी (बिजनौर) उ.प्र. में उत्सव, दिनांक- 29 सित. से 01 अक्टूबर 2018 तक
- बहजोई (सम्भल) उ.प्र. में उत्सव दिनांक- 19 से 21 अक्टू. 2018
- म. दयानन्द स्मृति, भवन न्यास, जोधपुर में 135वां सम्मेलन 28 सित. से 2 अक्टू. 2018 तक

सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

९

इस अंक में कहां है क्या?

भारतवर्षीय गौशालाएं/गौमाता का संरक्षण - ५
६ सम्पादकीय/हमारे गुरुकुल
ऐसे होते हैं आर्य/खानपान और स्वास्थ्य - ८
१० आर्यजगत के भजनोपदेशक
महान विभूतियां - ११ साहित्य समीक्षा- १२
काव्य जगत- १३ पुण्यतिथि- शतशः नमन्- १४

दिल्ली चलो अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

२५ से २८ अक्टूबर २०१८

रिपोर्ट पृष्ठ १५ पर

अब आप निरन्तर पढ़ते रहेंगे-

आर्यावर्त केसरी के नियमित स्तम्भ

प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं सचित्र सामग्री

ये हैं आर्यावर्त केसरी के कुछ महत्वपूर्ण स्तम्भ

- ऐसे होते हैं आर्य
- भारतवर्षीय गौशालाएं
- प्रकाशित आर्ष साहित्य- पुस्तकों की समीक्षा
- आर्य जगत की महान विभूतियां
- आर्य जगत के लोकोपयोगी न्यास (ट्रस्ट)
- आर्य जगत के गुरुकुल
- आर्य जगत के प्रकाशक और प्रकाशन
- आर्य जगत की ऐतिहासिक धरोहर
- आर्य जगत के क्रांतिवीर- अमर सेनानी- शहीद
- आर्य जगत के मूर्धन्य प्रवक्ता व तपस्वी सन्यासी वृन्द
- आर्य जगत के भजनोपदेशक
- आर्य जगत द्वारा संचालित प्रकल्प
- आर्य जगत की शिक्षण संस्थाएं; आदि-आदि।
- साथ ही, काव्यजगत, योग भगाये रोग, खानपान और स्वास्थ्य जैसे भी है कई नियमित कॉलम।

कृपया उपर्युक्त स्थाई कॉलमों (स्तम्भों) के लिए सचित्र सामग्री भेजें प्रकाशनार्थ।

साथ ही, अपने प्रियजनों को दें जन्म दिवस आदि की हार्दिक शुभकामनाएं तथा दिवंगत दिव्यात्मनों का करें भावपूर्ण स्मरण।

आर्यावर्त केसरी के इस अत्यन्त व्यय साधक, समय साध्य व श्रम साध्य प्रकाशन यज्ञ में आपकी तन-मन-धन से सहयोग रूपी पावन आहुति भी सादर निवेदित हैं।

मंगलकामनाओं सहित,

– डॉ० अशोक कुमार आर्य
सम्पादक (9412139333)

स्वामी अग्निवेश पर हमले की निन्दा

टनकपुर, चम्पावत, उत्तराखण्ड (रामदेव आर्य)। आर्य समाज द्वारा आर्यनेता व बालमजदूर मुक्तिमोर्चा के अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश पर किये गये जानलेवा हमले की कठोर शब्दों में निंदा की गयी। उपजिलाधिकारी पूर्णागिरि तहसील टनकपुर के माध्यम से एक ज्ञापन महामहिम राष्ट्रपति भारत सरकार की सेवा में आर्य समाज के प्रधान राजीव आर्य, मंत्री रामदेव आर्य, गंगा गिरि गोस्वामी, रामसिंह आर्य, सीमा, अनीता, आदित्य आदि की ओर से प्रेषित किया गया।

वार्षिक चुनाव समाचार

आर्यसमाज अमरोहा (उ०प्र०) :
प्रधान- नत्थू सिंह,
मंत्री- अभय आर्य,
कोषाध्यक्ष- सुभाष दुआ।

आर्यसमाज गोरखपुर, जबलपुर (म०प्र०) :
प्रधान- प्रकाशचन्द्र सोनी,
मंत्री- अनूप गायकवाड़,
कोषाध्यक्ष- वेदामृत गारी।

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-१, दिल्ली :
प्रधान- विजय लखनपाल,
मंत्री- राजेन्द्र कुमार वर्मा,
कोषाध्यक्ष- अमर सिंह पहल।

आर्यसमाज बाछौद :
प्रधान- बिरेन्द्र सिंह आर्य,
मंत्री- मनोज कुमार,
कोषाध्यक्ष- जगदीश चौहान खजांची।

आगामी कार्यक्रम

१६ से १८ नवम्बर २०१८ :- परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में भव्य ऋषि मेले का आयोजन।

७ से ९ अक्टूबर २०१८ :- दयानन्द मठ (चम्बा) हि०प्र० का वार्षिक उत्सव। महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय के विद्यार्थी देंगे विशेष प्रस्तुति। (मोबा० : 98050228771)

१९ से २१ सितम्बर २०१८ :- आर्य समाज, बहजोई, सम्भल (उत्तर प्रदेश) का 106वां वार्षिकोत्सव- लव कुमार आर्य मंत्री (मोबा. : 9412449471)

२ से ४ नवम्बर २०१८ :- आर्य समाज, दढ़ियाल, अमरोहा (उ.प्र.) का वार्षिकोत्सव, ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य, प्रधान (मोबा. : 9412493724)

२० से २१ अक्टूबर २०१८ :- आर्य समाज, मानकजुड़ी, कैलसा बॉर्डर, अमरोहा का वार्षिकोत्सव, सम्पर्क सूत्र- 9456283940

योग-ध्यान, साधना शिविर १६ से

उधमपुर, जम्मू कश्मीर (भारतभूषण आनन्द)। जम्मू कश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्द धाम आश्रम गढ़ी आश्रम में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक महात्मा चैतन्य स्वामी जी की अध्यक्षता एवं मां सत्यप्रियायति जी के सान्निध्य में दिनांक 16 से 23 सितम्बर 2018 तक निःशुल्क योग-ध्यान, साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया जाएगा। उपनिषद पर भी व्याख्यान होंगे। शिविर में स्वामी वेदपति जी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी, स्वामी नित्यानन्द जी आदि अनेक विद्वान पधार रहे हैं।

इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित कराने के लिए मो० : 9419107788 पर फोन करें।

शहीदों की याद में किया स्वस्ति यज्ञ

तेजपाल सिंह आर्य
रुड़की (हरिद्वार)।

विगत 23 जुलाई को देश के महान स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक, चन्द्रशेखर आजाद, श्रीमती झलकारी के जन्म दिवस पर स्वास्तिक महायज्ञ किया गया। इस अवसर पर शहीदों की वीरता, पराक्रम, आत्म बलिदान व शौर्य पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला गया। इस यज्ञ में यशवीर सिंह यजमान रहे। मदनलाल शर्मा के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। संयोजन तेजपाल सिंह आर्य पुस्तकालयाध्यक्ष ने किया। इस अवसर पर उषारानी वर्मा प्रधान, रामेश्वर प्रसाद सैनी पूर्व प्रधान, विनोद कुमार कोषाध्यक्ष, जे0पी0 त्यागी, सन्तोष सैनी, ज्ञानसिंह उपप्रधान, पुष्पा मदान पूर्व प्रधान विजय हान्डा, प्रेमचन्द्र शास्त्री, अर्चना शास्त्री, सन्दीप यादव, उपमंत्री, राजीव सैनी आदि उपस्थित रहे।

हीरो ग्रुप के फाउण्डर महात्मा सत्यानंद मुंजाल की स्मृति में डिस्पेंसरी का शुभारम्भ

लुधियाना। डी0ए0वी0 के पूर्व उपाध्यक्ष एवं हीरो ग्रुप के को-फाउंडर स्व0 महात्मा सत्यानंद जी मुंजाल की पुण्य स्मृति में मुंजाल परिवार ने उनके लुधियाना निवास स्थान पर सत्यानंद मुंजाल चैरिटेबल डिस्पेंसरी का शुभारंभ किया।

इस शुभ कार्य की शुरुआत उनके सुपुत्र श्री योगेश मुंजाल, श्री सुरेश मुंजाल और श्री महेश मुंजाल ने हवन के माध्यम से की। इस मौके पर योगेश मुंजाल ने बताया कि श्री सत्यानंद जी जब भी समाज कल्याण के बारे में सोचते थे, तो शिक्षा और स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा अहमियत देते थे। शिक्षा के प्रसार के लिए पहले ही उनके बनाये शिक्षण संस्थान बहुत अच्छे से काम कर रहे हैं। इसलिए अब उनके नाम से परिवारजन चिकित्सा के क्षेत्र में लुधियाना वासियों को लाभान्वित करना चाहते हैं।

दयानंद मैडिकल कालेज के सेक्रेटरी श्री प्रेम गुप्ता ने इस चैरिटेबल क्लीनिक का उद्घाटन किया और कहा कि महात्मा जी हमेशा उनके लिए प्रेरणास्रोत रहे हैं। इस क्लीनिक में जनरल ओपीडी के अलावा हर प्रकार के टेस्ट जरूरतमंद लोगों के लिए कम दरों पर किये जाएंगे। इसके अलावा फ्री दवाइयों का प्रावधान भी किया गया है। डॉ0 रजनीश त्यागी ने बताया कि इस क्लीनिक से स्थानीय को बहुत लाभ पहुंचेगा।

इस दौरान रमा मुंजाल, उर्मिल मुंजाल, रेनू मुंजाल, विजय मुंजाल, रेखा मुंजाल, आर्य समाज मॉडल टाउन के प्रधान राजेन्द्र, हीरो साइकिल के एग्जिक्यूटिव डायरेक्टर एस के राय, एवन साइकिल के ओंकार लसह पाहवा, नोवा साइकिल के हरमोहिंदर सिंह पाहवा, डॉक्टर जीएस वंडर, डॉ0 अश्विनी चौधरी व नोबेल फाउण्डेशन के चेयरमैन राजेन्द्र शर्मा आदि उपस्थित थे।

प्रखर आर्य, स्वतंत्रता सेनानी व पत्रकार राममोहन बी०काम० की जयन्ती मनायी

चन्दौसी (सम्भल) उ०प्र०। बाबूराम इण्टर कालेज के प्रांगण में श्री राममोहन सेवा आश्रम के बैनर तले अनेक स्थानीय स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से क्षेत्र के जाने-माने शिक्षाविद् सुरेश वार्ष्णेय की अध्यक्षता में स्थानीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, इतिहासकार, साहित्यकार, चन्दौसी के प्रथम स्नातक पत्रकार बाबू राममोहन बी0काम0 की जयन्ती धूमधाम से मनाई गयी।

मुख्य अतिथि नेहरू इंटर कालेज रुदायन (बदायूं) के पूर्व प्रधानाचार्य तथा क्षेत्र के जाने-माने कवि डॉ0 अवधेश पाठक ने श्री राम मोहन जी को नमन् करते हुए कहा कि वह एक वंदनीय तथा अनुकरणीय व्यक्तित्व थे।

इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि राममोहन जी संस्कारों पर बल देते थे। संस्कारों को वे जीवन का लक्ष्य मानते थे। उन्होंने संस्था, श्री राममोहन सेवाश्रम से अपील की कि वह अपने कार्यक्रमों में बच्चों और युवकों के संस्कारों के निर्माण से सम्बन्धित कार्यक्रम चलायें।

ज्ञातव्य है कि श्री राममोहन जी प्रखर आर्यसमाजी, पत्रकार व इतिहासकार थे। वे चन्दौसी के प्रथम स्नातक थे। उनकी 102वीं जयन्ती पर आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार प्रमोद गुप्ता, हरीश गुप्ता, समाजसेवी टी0एस0 पाल, किशनलाल शर्मा, कवि संजीव शर्मा, ओ0पी0 वैश्य आदि सहित अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि श्री राममोहन जी चन्दौसी के वरिष्ठ पत्रकार डॉ0 तुमुल विजय शास्त्री के पूज्य पिता जी थे। अन्त में संस्कार भारती के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामकिशोर मिश्रा ने कहा कि डॉ0 तुमुल विजय शास्त्री द्वारा संचालित श्री राममोहन सेवा आश्रम किसी विश्वविद्यालय से कम नहीं है।

घुसपैठियों के खिलाफ सौंपा ज्ञापन

हापुड़ (उ.प्र.)। आर्य समाज हापुड़ ने प्रधान आनन्द प्रकाश आर्य के नेतृत्व में राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए भारत में अवैध घुसपैठियों को बाहर निकालने के लिए 26 अगस्त को आर्य समाज के गेट पर धरना-प्रदर्शन कर उप जिलाधिकारी को राष्ट्रपति के नाम एक ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में मांग की गयी कि घुसपैठियों को चिन्हित कर उन्हें देश से बाहर निकालने हेतु अविलम्ब प्रभावी कार्यवाही की जाए।

इस अवसर पर डॉ0 विकास अग्रवाल, डॉ0 रामपाल आर्य, सुन्दरलाल आर्य, प्रभात अग्रवाल, सुधीर गोयल, आशुतोष आजाद, धीरव्रत त्यागी, नरेन्द्र आर्य, माया आर्य, अलका सिंहल तथा वीना आर्या आदि ने अपने विचार रखे।

शोक समाचार

राकेश मेहरा को पितृशोक

अमृतसर। आर्यसमाज शक्तिनगर के मंत्री राकेश मेहरा के पिता राधेश्याम मेहरा का 6 जुलाई 2018 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से अमृतसर के समस्त आर्य विद्वानों ने वेद मंत्रोच्चार के साथ शिवपुरी श्मशान घाट अमृतसर में किया। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। दिवंगत आत्माओं को आर्यावर्त केसरी परिवार की ओर से श्रद्धांजलि।

टंकारा ऋषि बोधोत्सव २०१८ के चित्रों को देखने और डाउनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से
https://www.facebook.com/AjayTankarawala/
पर जाएं और लाइक व शेयर अवश्य करें।

घर-घर तक पहुँचाएं कालजयी ग्रंथ
सत्यार्थ प्रकाश
: प्रकाशक :
आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा
सम्पर्क- 9412139333

।। ओ३म् ।।
उच्चस्तरीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर
दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़

आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान-पिपासु, समाधि, वैराग्य, तत्वज्ञान के अभिलाषी, आत्मकल्याण के इच्छुक, अध्ययन- स्वाध्याय-प्रेमी, भद्रशील महानुभावों !

आपके प्रिय दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़ में योगाभ्यास के पथ पर आरोहण, प्रगति, सफलता, अन्तःकरण की परिशुद्धि ऐहिक सुख-शान्ति एवं आत्मा व परमात्मा की प्राप्ति हेतु वैदिक दर्शनों के आधार पर भाद्रपद शु. 9 से भाद्रपद शु. 14/2075 तदनुसार 18 सितबर से 23 सितबर 2018 तक पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक की अध्यक्षता में छः दिन का उच्चस्तरीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है।

आप इस पुनीत अवसर को अपने जीवन से सम्बद्ध करें। इसमें मुख्य रूप में उच्च स्तर के साधक साधिकाएं भाग लेगें। शिविर में विशेष रूप से वेद, दर्शन आदि आर्ष ग्रन्थों के आधार पर ध्यान, उपासना का प्रशिक्षण, विवेक-वैराग्य, समाधि की प्राप्ति हेतु निदिध्यासन आदि के रूप मे अनेक वैज्ञानिक विधियों एव उपायों का परिज्ञान कराया जायेगा। इसके साथ सूक्ष्म व उच्च आध्यात्मिक स्तर की वृद्धि हेतु आंशिक रूप में दर्शनों का अध्ययन भी कराया जायेगा। यम-नियम, धारणा-ध्यान-समाधि, ईश्वर समर्पण, अविद्या आदि क्लेश निवारण जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर मार्गदर्शन किया जायेगा।

आवेदन और शिविर शुल्क जमा करने हेतु सम्पर्क सूत्र -
दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन रोजड़, पत्रा - सागपुर.ता. - तलोद, साबरकांठा गुजरात 383307, मोबाइल :- 9409415011, 9409415017

26 से होगा वार्षिक महोत्सव

बहादुरगढ़ (झज्जर) हरियाणा (स्वामी धर्ममुनि)। आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का 52वां स्थापना दिवस-वार्षिकोत्सव समारोह 26 सितम्बर से 02 अक्टूबर तक होगा। इस अवसर पर ऋग्वेद बृहद यज्ञ तथा निशुल्क ध्यान योग शिविर भी स्वामी धर्ममुनि के सानिध्य में सम्पन्न होगा।

बरनाला में आर्य महासम्मेलन ११ को

बरनाला (प्रेम भारद्वाज)। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि0), गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन 11 नवम्बर 2018 को बरनाला में आयोजित किया जा रहा है। सभा ने अपील की है कि पंजाब की समस्त आर्यसमाजें इन तिथियों में अपने-अपने आर्य समाज का अन्य कोई भी कार्यक्रम न रखें और इस आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए पूरी शक्ति से जुट जाएं। सभा की विज्ञप्ति में कहा गया है कि इससे पूर्व 17 फरवरी 2017 को लुधियाना और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सफल आर्य महासम्मेलनों का आयोजन कर चुकी है।

स्वनामधन्य- आर्यरत्न, तपोनिष्ठ

महाशय सत्यप्रकाश जी आर्य

जन्मशती वर्ष : 25 दिसम्बर 2017-18

स्मारिका का भव्य प्रकाशन

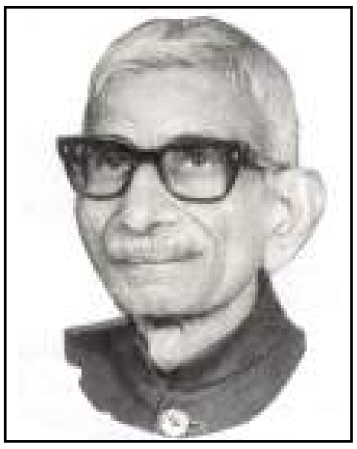

स्वनामधन्य उदारमना, आर्यरत्न, प्रखर समाजसेवी **महाशय सत्यप्रकाश जी आर्य** आजीवन आर्यसमाज, गुरुकुल तथा वैदिक संस्थाओं के प्रति समर्पित रहे। वैदिक धर्म, महर्षि दयानन्द के मिशन व आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए उनका योगदान अतुलनीय रहा। वे आर्यसमाज के लिए सर्वस्व समर्पित करने के लिए सदैव उद्यत रहते थे। **उनको केवल एक ही चिन्ता थी कि आर्य समाज का प्रसार अधिक से अधिक कैसे हो।**

हम सभी के लिए यह गौरव की बात है कि **२५ दिसम्बर २०१७-१८** पूज्य महाशय जी का जन्मशती वर्ष है। इस पुनीत अवसर पर **आर्यावर्त प्रकाशन** द्वारा बड़े स्तर पर एक **भव्य एवं यादगार स्मारिका** का प्रकाशन किया जाएगा, ताकि वर्तमान तथा आगे आने वाली संततियाँ महाशय जी जैसे महामानवों के प्रति गर्व कर सकें। निश्चय ही ऐसी देवतुल्य विभूतियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से राष्ट्र व समाज को एक रचनात्मक दिशा मिलती है। विश्वास है कि यह स्मारिका इस दिशा में एक मील का पत्थर सिद्ध होगी। बड़ी प्रसन्नता है कि महाशय जी के सुपुत्र प्रिय भ्राताश्री **विनय प्रकाश जी आर्य** एवं **पौत्र अभय आर्य** आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त प्रकाशन एवं आर्य समाज के मिशन के लिए निरन्तर सहयोग प्रदान करते रहते हैं। उनके सहयोग से जनहितकारी तथा आत्मकल्याणकारी उत्कृष्ट साहित्य का प्रकाशन भी किया जाता रहता है।

महाशय जी से जुड़े विद्वान लेखकों तथा आर्यसमाज एवं समाज के विभिन्न घटकों, संस्थानों से जुड़े विज्ञ महानुभावों से अनुरोध है कि वे अपनी सशक्त लेखनी से महाशय जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपने लेख, संस्मरण तथा रचनाएं आदि यथाशीघ्र प्रकाशनार्थ भेजें। धन्यवाद,

-: निवेदक :-

हरिश्चन्द्र आर्य	**विनय प्रकाश आर्य- अंजु आर्या**	**डॉ. अशोक आर्य**
मार्गदर्शक	मुख्य समन्वयक	सम्पादक
उषा आर्या	**अभय आर्य- तूलिका आर्या**	**डॉ. बीना रुस्तगी**
मुख्य संयोजक	अतिथि सम्पादक	प्रबन्ध सम्पादक

आर्ष साहित्य बिक्री केन्द्र

समस्त प्रकार का आर्ष साहित्य- वेद, उपनिषद, दर्शन, ऋषि प्रणीत ग्रन्थ, जीवन परिचय, सम-सामयिक साहित्य सहित पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य एवं ओउ़म ध्वज, पट्टिकाएं, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

व्यवस्थापक- आर्यावर्त प्रकाशन

गोकुल विहार, अमरोहा (उ०प्र०)-२४४२२१

फोन : 05922-262033/09412139333

टंकारा चलो : अर्यावर्त केसरी के संयोजन में

टंकारा, अहमदाबाद, द्वारिकापुरीधाम, पोरबंदर तथा सोमनाथ आदि

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा कार्यक्रम-2019

कार्यालय- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा- 26 फरवरी से 06 मार्च 2019 तक

प्रस्थान : 26 फरवरी 2019 को प्रातः 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप द्वारा। (25 फरवरी 2019 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्यसमाज मंदिर, गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद)

वापसी : 06 मार्च 2019 को अमरोहा सायं 5:45 बजे आला हज़रत एक्सप्रेस से।

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

- **अहमदाबाद, आर्यवन-रोजड़-** साबरमती आश्रम, अक्षरधाम, वानप्रस्थ साधक आश्रम, गुरुकुल आर्यवन आदि।
- **द्वारिकापुरीधाम-** चार धामों में से एक धाम द्वारिकाधीश मंदिर, गोमती गंगा, श्री कृष्ण महल, भेंटद्वारिका, रुक्मणी मन्दिर, गोपी तालाब, आदि।
- **नागेश्वर महादेव-** द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक नागेश्वर महादेव।
- **पोरबन्दर-** महात्मा गांधी का जन्मस्थल, आर्ष कन्या गुरुकुल, सुदामा महल, नक्षत्रशाला, भारतमाता मंदिर आदि।
- **भालका तीर्थ-** वह ऐतिहासिक स्थली, जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण को तीर लगा था।
- **सोमनाथ तीर्थ-** ऐतिहासिक सोमनाथ मन्दिर तथा समुद्र दर्शन एवं 'लाइट एंड साउंड शो' का दिग्दर्शन।
- **ऋषि जन्मभूमि टंकारा-** महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली, ऐतिहासिक शिवालय, पावन नदी, गोशाला, टंकारा ट्रस्ट भवन तथा आर्यसमाज का परिभ्रमण एवं बोधोत्सव में सहभागिता।

: सहयोग राशि :

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आर्यावर्त केसरी- प्रबंध समिति द्वारा होगी।

इस यात्रा निमित्त कुल धनराशि रु० 4500/- (सीनियर सिटीजन के लिए रु० 4000/-) देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 2000/- की धनराशि दिनांक- 10 अक्टूबर 2018 तक नकद या आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड ड्राफ्ट/चैक द्वारा कार्यालय के पते पर भेजनी आवश्यक होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। इसी प्रकार जो महानुभाव AC III व AC II में यात्रा करने के इच्छुक हों, उनके लिए भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। वातानुकूलित श्रेणी के लिए कुल धनराशि रु० 5700/- (सीनियर सिटीजन के लिए रु० 5200/-) देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 3000/- की धनराशि अग्रिम देय होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। यह धनराशि आपके द्वारा 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक शाखा- अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या- 30404724002, IFSC Code SBIN0000610 में जमा करायी जा सकती है। प्रदत्त धनरशि की रसीद कार्यालय द्वारा आपको तत्काल प्रेषित की जाएगी। विलम्ब से प्राप्त धनराशि की दशा में रिजर्वेशन सुनिश्चित नहीं हो पाते, जिससे भारी असुविधा हो सकती है। इसलिए जितनी शीघ्रता हो सके, अपनी धनराशि जमा करा दें। समुचित व्यवस्था में आपका पूर्ण सहयोग प्रार्थनीय है।

-: यात्रियों को आवश्यक निर्देश :-

● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, परिचय-पत्र (आईडी प्रूफ), दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि। ●अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, यह भी सूचित करें।

नोट :

१. परिस्थितिवश यात्रा की तिथियों तथा परिभ्रमण-स्थलों में आंशिक परिवर्तन का अधिकार संयोजक को होगा। २. यात्रा रेलगाड़ी तथा डीलक्स बसों द्वारा संपन्न होगी। ३. आवासीय व्यवस्था ट्रस्ट अथवा तीर्थस्थलों पर उपलब्ध व्यवस्था के अन्तर्गत रहेगी। यदि कोई महानुभाव होटल में रुकना चाहते हों, तो इस सुविधा के लिए होटल का वास्तविक शुल्क अलग से देय होगा, जिसके लिए पूर्व में अवगत कराना होगा, अथवा यह व्यवस्था यथासंभव उपलब्धता पर निर्भर रहेगी। कोटिशः धन्यवाद;

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का पावन कार्यक्रम बनाएं...

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, यात्रा संयोजक एवं संपादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कालोनी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ०प्र०)- 244221
(चलभाष : 09412139333, 8630822099)

❑ **हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412), ❑ अभय आर्य (9927047364), नरेन्द्रकांत गर्ग- व्यवस्थापक (09837809405), ❑ सुमन कुमार वैदिक- सह व्यवस्थापक (09456274350)**

अमेरिका में हुए महासम्मेलन में मंच का दृश्य- केसरी

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा

अटलांटा में हुआ आर्य महासम्मेलन

अटलांटा (अमेरिका)। एक फाइव स्टार होटल मेरीओट के बड़े हाल में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा आयोजित ४ दिवसीय कॉन्फ्रेंस का उदघाटन हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल डॉ० देवव्रत आचार्य जी ने ओ३म् का झंडा फहरा कर और दीप जला कर किया। नर्मदांचल के आचार्य आनंद पुरुषार्थी ने कहा कि हमारी संस्कृति में हम सभी पर माता पिता ऋषियों देवताओं का ऋण माना गया है जिसको चुकाने के लिया एक उत्तम संतान हर गृहस्थी को उत्पन्न करके अपने राष्ट्र को समर्पित करना होता है। जनकनंदिनी सीता, मदालसा, गंगा, सुभद्रा, लिटिजिया जैसी महिलाओं विश्व प्रसिद्ध संतानों लव कुश, भीष्म पितामह, अभिमन्यु, नेपोलियन बोनापार्ट आदि के ऐतिहासिक उदाहरणों में हम इसके साफल्य को देखते हैं।

आचार्य जी ने १६ बिन्दुओ की व्याख्या करके स्पष्ट किया कि सभी माता पिता को किन बातों का पालन करना चाहिए। जिसमें प्रातःकाल जागरण से लेकर भोजन, वार्तालाप,

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देववृत के साथ आनन्द पुरुषार्थी

व्यायाम व्यवहार, दादा दादी, नाना नानी के साथ निकटता, शाकाहार का सेवन, मादक पदार्थो, मांसाहार का त्याग आदि सम्मिलित है।

एक सत्र में प्रात: ६ से ७ तक एक घंटे की योग ध्यान उपासना का भी प्रशिक्षण दिया। मॉरीशस, इंग्लैंड, केनेडा आस्ट्रेलिया, सहित अनेक देशों के सुयोग्य विद्वान महानुभावो ने इस कांफ्रेंस में भाग लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा, मिशिगन अमेरिका के मंत्री, भुवनेश खोसला ने संचालन किया।

१९ वें कारगिल विजय दिवस पर 'राष्ट्र रक्षा यज्ञ'

पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर वापिस लिया जाये- अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष

नई दिल्ली। २६ जुलाई को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में १९ वें ''कारगिल विजय दिवस'' के अवसर पर नई दिल्ली के ''संसद मार्ग'' पर परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के नेतृत्व में ''राष्ट्र रक्षा यज्ञ'' का आयोजन कर कारगिल के वीर शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर सैंकड़ों आर्य समाजियों ने पहुँच कर देश की एकता व अखण्डता की रक्षा का संकल्प लिया।

इस अवसर पर श्री आर्य ने कहा कि अब यह स्पष्ट हो चुका है कि भारत में आंतकवादी गतिविधियों व कश्मीर में अलगाववाद के पीछे पाकिस्तान प्रायोजित आंतकवाद का हाथ है। अतः केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि अब पाकिस्तान को उसकी भाषा में कठोरता से जवाब दिया जाये और पाक अधिकृत कश्मीर वापिस लिया जाये। समय की मांग है कि सरकार आंतकवादियों व उनके संरक्षकों को सख्ती से कुचले, देश के आत्मसम्मान की कीमत पर कोई समझौता नहीं हो सकता।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के कार्यक्रम का दृश्य- केसरी

आंतकवादियों को सार्वजनिक रूप से फांसी दी जाये। आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने कारगिल के शहीदों को श्रद्धांजली देते हुए केन्द्र सरकार से मांग की कि कारगिल के शहीदों की याद में दिल्ली में एक भव्य स्मारक बनाया जाये, जिससे उनके बलिदान से नयी युवा पीढ़ी प्रेरणा ले सके।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य महेन्द्र भाई ने कहा कि शहीदों का बलिदान तभी सार्थक होगा जब हम पुनः वैसी परिस्थितियां न बनने दें। इस अवसर पर रामकुमारसिंह आर्य, प्रवीन आर्य, वेदप्रकाश आर्य, ओमवीरसिंह आर्य, अरूण आर्य, संजीव आर्य व अमित आर्य आदि ने भी अपने विचार रखे।

वेद ही भारत की राष्ट्रीय धारोहर : डीएवी

कोटा। डीएवी विद्यालय में प्राचार्या एवं उपक्षेत्रीय अधिकारी श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने कहा कि वेद में विद्यमान दिव्य ज्ञान ही भारत की राष्ट्रीय धारोहर है। वैदिक ज्ञान के प्रचार प्रसार में डी.ए.वी अपनी अहम भूमिका निभा रहा है और बच्चों में आधुनिक ज्ञान के साथ साथ हमारी संस्कृति और संस्कारों का भी बीजारोपण कर रहा है।

मुख्य अतिथि श्री नरदेव आर्य, प्रधान आर्य समाज रावतभाटा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि परमात्मा ने वेद का सर्वप्रथम ज्ञान चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को कराया। परमात्मा द्वारा ही सूर्य-चंद्र आदि की रचना की गई है उनकी प्रामाणिकता पर संदेह नहीं है। ठीक उसी प्रकार परमात्मा द्वारा प्रणीत वेदों के ज्ञान की प्रामाणिकता निस्संदेह एवं सर्वोच्च है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अर्जुन देव चड्ढा प्रधान जिला आर्यसमाज सभा ने कहा कि वेद

जिला प्रधान अर्जुन देव चढ्डा के साथ प्राचार्या व अन्य- केसरी

मानव मात्र के लिए हैं इनमें संपूर्ण मानव जाति के विकास के सूत्र निहित है। डीएवी ही ऐसी संस्था है जिसके माध्यम से शिक्षा और संस्कार बच्चों को प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद पहले व्यक्ति थे जिन्होंने महसूस किया कि लोग वैदिक ज्ञान को भूलते जा रहे हैं। इसलिए उन्होंने 'वेदों की ओर लौटो' का नारा दिया।

विशिष्ट अतिथि भारती नारायण (आई.पी.एस.) पुलिस महानिरीक्षक बैंगलूरू ने कहा कि अंधकार को कोसने की अपेक्षा एक दिया जलाना अधिक श्रेष्ठ है। ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करता है। इस अवसर पर आर.सी. आर्य, राधावल्लभ राठोर, लाल चन्द आर्य, धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य, प्रदीप शर्मा तथा सुनिता राय ने भी विचार रखे। संचालन प्रद्युम्न शर्मा ने किया।

वर चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, जन्म- 12 मई 1992, कद- 5 फुट 6 इंच, शिक्षा- बी.टेक, हिन्दुस्तान ऐरोनोटिक्स में मैनेजर युवती हेतु आर्यसमाजी परिवार का समकक्ष संस्कारित युवक चाहिए।

सम्पर्क- 8368508395, 9456274350

वधु चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, आयु-28 वर्ष, कद- 5 फुट 8 इंच, शिक्षा- एम.बी.ए., प्रोफेसर, व्यापार में संलग्न युवक हेतु आर्यसमाजी परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए।

सम्पर्क- 9456804666

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए, और चुनिए एक सुयोग्य जीवन-साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.) (चलभाष : 09412139333)

दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ में प्रवेश हेतु सूचना

आर्य जगत के महान योगी स्वामी श्री सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा सन् 1986 ई0 में स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़ उच्च स्तर के योग प्रशिक्षकों तथा वैदिक दार्शनिक विद्वानों के निर्माण कार्य में संलग्न है। इस महाविद्यालय में प्रवेश के इच्छुक ब्रह्मचारी शीघ्र सम्पर्क करें।

प्रवेश के लिए योग्यता : प्रवेश केवल ब्रह्मचारियों (पुरुषों) के लिए, आयु- कम से कम 18 वर्ष, शैक्षणिक योग्यता- कम से कम 12वीं या समकक्ष।, व्याकरणाचार्य, शास्त्री या स्नातक को वरीयता।

विशेषताएं : प्रत्येक ब्रह्मचारी को विद्यालय में भोजन, आवास, वस्त्र, आसन, घी-दूध, फल, पुस्तक, चिकित्सा आदि की उत्तम व्यवस्था निःशुल्क उपलब्ध है। प्रतिदिन व्यक्तिगत उपासना के लिए अवसर उपलब्ध है। प्रतिदिन यज्ञ, वेदपाठ, वेदस्वाध्याय, आत्मनिरीक्षण आदि होता है। क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के माध्यम से विवेक-वैराग्य, स्व-स्वामि- संबन्ध (ममत्व) को हटाना, ईश्वर-प्रणिधान, मनोनियंत्रण, यम-नियम, ध्यान, समाधि आदि विषयों का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रतिदिन आध्यात्मिक उन्नति के लिए कुछ घण्टे मौन पालन का अवसर उपलब्ध है।

सम्पर्क हेतु पता : दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़, पत्रा0- सागपुर, ता0- तलोद, जिला- साबरकांठा, गुजरात- 383307, फोन : (02770) 287518, मोबा0 : 9409415011, 9409415017

E-mail : darshanyog@gmail.com, Web : www.darshanyog.org

वेदों में अबध्य है गाय

हृदयनारायण दीक्षित

सोचा-समझा दुराग्रह घृणित होता है। जीवहत्या प्रकृति की योजना में बर्बर हस्तक्षेप है। फिर भी केरल के दुस्साहसी कांग्रेस जनों ने बछड़े को सार्वजनिक रूप से काटा और गोमांस वितरण का आयोजन किया। ऐसे 'पराक्रमी' कांग्रेस जन अपने कृत्य से भले ही प्रसन्न हों, लेकिन राष्ट्र सन्न है। पशुओं को क्रूरता और हिंसा से बचाने के लिए पशु-क्रूरता निवारण कानून बनाया गया था। केन्द्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के निर्णयानुसार पशु तस्करी रोकने के लिए 'पशु क्रूरता निवारण कानून' से प्राप्ति शक्तियों का प्रयोग किया और पशु क्रूरता निरोधक (पशुधन बाजार) नियम, 2017 जारी किया। संसद की स्थाई समिति ने भी पशु बाजारों में तस्करों की सांठगांठ रोकने को जरूरी बताया था। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, केरल के विजयन और तमिलनाडु के नेताओं द्वारा इसका विरोध किया जा रहा है। कुछेक विपक्षी दल और टिप्पणीकार इसे असंवैधानिक बता रहे हैं। लोकतंत्र में विरोध को अनुचित नहीं कहा जा सकता। तीन उच्च न्यायालयों के अभिमत भी आ गये हैं। तीनों की राय भिन्न है। मद्रास हाईकोर्ट ने नए नियमों पर स्थगनादेश दिया है। केरल हाईकोर्ट ने मामले को खारिज कर दिया है। राजस्थान हाईकोर्ट ने गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने का परामर्श दिया है।

कोर्ट में जाना प्रत्येक नागरिक या संगठन का अधिकार है, लेकिन सरकारी अधिसूचना के विरोध में बछड़े को काटना बहुसंख्यक भारतीय जनगणमन की भावनाओं को सीधी चुनौती है। अधिसूचित नियमों की सांविधानिकता को लेकर भी प्रश्न उठाये गये हैं। पशुमांस के व्यापार को मौलिक अधिकार बताया गया है। अनुच्छेद 19 (1जी) का उल्लेख किया गया है। मौलिक अधिकारों वाला यह अनुच्छेद पठनीय है- 'सभी नागरिकों को कोई वृत्ति, उपजीविका, व्यापार या कारोबार करने का अधिकार होगा।' गोवंश हत्या के समर्थक इन्हीं पंक्तियों के बहाने इस व्यवसाय को मौलिक अधिकार बता रहे हैं। दूसरी ओर इसी अनुच्छेद 19(6) में कहा गया है कि 'उक्त उपखण्ड 19(1जी) की कोई बात राष्ट्र राज्य को निबंध करने वाला कोई कानून बनाने से नहीं रोकेगी।' व्यापार या वृत्ति चुनना व्यक्ति का अधिकार है, तो बाजार की विनियमिति करना राष्ट्र राज्य का मौलिक अधिकार है। दोनों के अधिकार एक ही अनुच्छेद 19 में मौजूद हैं। मूलभूत प्रश्न है कि केन्द्र ने गाय, भैंस, ऊंट सहित तमाम पशुओं के बाजार को विनियमित करने की अधिसूचना जारी की, लेकिन विरोधियों ने प्रदर्शन के लिए गोवंश काटने और बीफ पार्टी का निश्चय ही क्यों किया। दरअसल ऐसे लोगों का लक्ष्य बहुसंख्यक भारत की भावनाओं पर हमला करना ही है।

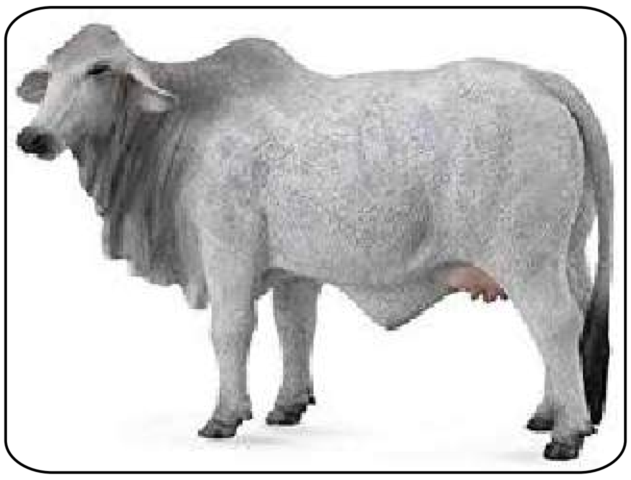

बूचड़खानों की ओर से पहले भी सुप्रीम कोर्ट में मुकदमे गये। 1969 में कोर्ट ने अनुच्छेद (1जी) के अन्तर्गत बूचड़खानों को राहत दी, लेकिन 2005 में सात न्यायमूर्तियों की पीठ ने निर्णय दिया कि 'पशु कभी भी अनुपयोगी नहीं होते उनके गोबर का उपयोग बायोगैस में और मूत्र का उपयोग औषधि निर्माण में होता है।' न्यायालय ने उपयोगितावाद के आधार पर भी गोवंश संरक्षण और गोवध निषेध का औचित्य ठहराया। सुप्रीम कोर्ट के निष्कर्ष पालनीय होते हैं, फिर भी राजनीतिक हाय-तौबा मची है। पशु संरक्षण का प्रश्न उपयोगितावाद से ही नहीं जांचा जा सकता। उन्हें अनुपयोगी बताकर काट देना प्राकृतिक न्याय के विरुद्ध है। क्रूर उपयोगितावाद और उपभोक्तावाद के चलते ही हमारे बूढ़े मां-बाप भी अनुपयोगी हो रहे हैं। लोखों बूढ़े अभिशप्त हैं। गोवंश हत्या का निषेध भारत का सांस्कृतिक प्रश्न है। यह भारत के संविधान का दर्शन भी है।

संविधान सभा में गोवध रोक पर बहस हुई थी। सेठ गोविंददास ने गोवध निषेध को सांस्कृतिक विषय बताया और कहा कि गाय श्रीकृष्ण के समय से महत्वपूर्ण है। गोवध निषेध को मौलिक अधिकार बनाना चाहिए। शिब्बन लाल सक्सेना, ठाकुरदास भार्गव, रामनारायण सिंह, रघुवीर, आरवी धुलेकर, राम सहाय और रणवीर सिंह आदि अनेक सदस्यों ने भी इसे महत्वपूर्ण बताया। एक सदस्य एन राय ने बूढ़े गोवंश को बचाने के प्रयास को आर्थिक आधार पर गलत बताया। यह भी कहा गया कि एक बड़ा वर्ग गोमांस खाता है। इसलिए गोवध निषेध अनुचित होगा। संविधान सभा में गोसंरक्षण को लेकर सहमति थी, इसलिए पूरे विषय को संविधान के नीति निदेशक तत्वों (भाग 4) में रखा गया। भारतीय संस्कृति और संविधान के विरोधी नीति निदेशक तत्वों को महत्वपूर्ण नहीं मानते। अनुच्छेद 37 में नीति निदेशक तत्वों की महत्ता का उल्लेख है कि 'इस भाग में सम्मिलित विषय किसी न्यायालय द्वारा प्रवर्तनीय नहीं होंगे। फिर भी इनमें कथित तत्व देश के शासन में मूलभूत हैं। कानून बनाते समय इन तत्वों को लागू करना राष्ट्र राज्य का कर्तव्य होगा।' अनुच्छेद 48 के अनुसार 'राज्य कृषि और पशुपालन को आधुनिक वैज्ञानिक प्रणालियों से संगठित करने का प्रयास करेगा। विशिष्टतया गायों, बछड़ों तथा अन्य दुधारु और मालवाहक पशुओं की नस्लों के परिरक्षण सुधार के लिए और उनके वध का प्रतिषेध करने के लिए कदम उठायेगा।'

गोसंरक्षण का प्रश्न बड़ा है। उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश सहित तमाम राज्यों में गोवध निषेध कानून हैं। जहां नहीं है, उन राज्यों में भी लोकमत का दबाव है। यह कहना गलत है कि सरीकार किसी भी भोजन सूची के खाद्य पदार्थ नहीं तय कर सकती। गोमांस खाना मूल अधिकार नहीं है। मौलिक अधिकार भी लोकव्यवस्था के संयम में ही फलीभूत होते हैं। जीवन का मौलिक अधिकार प्रकृति प्रदत्त है। जीवन सरकार की देन नहीं है। कोर्ट ने गंगा को व्यक्ति माना है। पशु भी जीवंत है। पशु संरक्षण हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। लेकिन कुछेक गोभक्त या गोसंरक्षक कानून से खिलवाड़ करते देखे गये हैं। उनकी आस्था सम्माननीय है, लेकिन विधिविरुद्ध कर्म नहीं। कई राज्यों में बिना मालिक के गोवंश इधर-उधर घूम रहे हैं। किसान परेशान हैं। गोसंरक्षक गोपालक संस्थाएं कम हैं। गोसंरक्षण के लिए समाज को आगे आना ही होगा।

कुछेक स्वयंभू विद्वान वैदिक पूर्वजों को गोवंशभक्षी बताते हैं। वे ऋग्वेद के एक मंत्र (8.4.11) 'उक्षान्नाय, वशान्नाय सोम पृष्ठाय वेधसे' में प्रयुक्त उक्षा का अर्थ बैल व वशा का अर्थ गाय करते हैं। उनके अर्थ में अग्निदेव मांसभक्षी हैं, इसलिए पूर्वज भी उन्होंने उक्षा व वशा के साथ प्रयुक्त 'अन्नाय' शब्दों का अर्थ शरारतन छोड़ दिया। सातवलेकर का अनुवाद है 'अन्न को रस से सिंचित करने वाले, अन्न को रमणीय बनाने वाले सोमपीठ अग्नि की हम उपासना करते हैं। मार्क्सवादी विचारक डॉ0 रामविलास शर्मा ने ऐसे तमाम तर्क देकर आर्यों को मांसभक्षी नहीं माना है। गोवंश भारतीय परंपरा में आदरणीय है। ऋग्वेद (1.164.27) में यह अबध्य है। अथर्ववेद में पशु क्रूरता अधिनियम जैसी शब्दावली है। कहते हैं, 'जो गाय के कान पर प्रहार करते हैं, वे समाज पर प्रहार करते हैं। जो गाय पर परिचय चिह्न खोदते हैं, उनकी धन समृद्धि दण्डनीय है।' यहां गाय के मालिक पर भी दण्ड है। 'जिस गोपति के सामने कौआ गाय को चोट पहुंचाता है, उसकी संतानें दण्डनीय हैं।' गाय का आदर असंदिग्ध है। कोई कह सकता है कि भारत की बहुसंख्यक जनता ही गाय का आदर करती है। ऐसा सच है तो भी शेष लोगों को बहुसंख्यकों की श्रद्धा का सम्मान करना चाहिए।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष हैं)

(दैनिक जागरण, 2-6-17 से साभार)

ऋग्वेद

।। ओ३म् ।।

यजुर्वेद

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● **पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प**

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ है तथा इसका मूल्य 150/- प्रति ग्रन्थ है।

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद

अथर्ववेद

सत्यार्थ प्रकाश
का एक और नवीन संस्करण प्रकाशित
साइज़ - 18 x 23 x 8
मूल्य- अजिल्द- 60
सजिल्द- 70

दानदाताओं तथा सहयोगी महानुभावों के चित्र प्रकाशन की सुविधा। जन-जन तक पहुंचाएं ऋषिवर

दयानन्द का यह क्रान्तिकारी ग्रन्थ

सर्व शिरोमणि हिन्दी भाषा

सर्व शिरोमणि भाषा हिन्दी है इसमें अनुपम गहराई।
जिसने सहज भाव से पोषा मिली उसे सुरभित अमराई।

सहजता, उदारता की भाषा हिन्दी की गौरवमयी परम्परा से सम्पूर्ण संसार परिचित है। संवैधानिक दृष्टि से 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को संविधान में राजभाषा का दर्जा मिला, पर आज आजादी के 71 वर्ष बाद भी संतोषजनक स्थिति नहीं हैं। यद्यपि प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को देशभर में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में भव्य आयोजन किये जाते हैं। कहीं हिन्दी सप्ताह तो कहीं हिन्दी माह भी मनाया जाता है। विडम्बना यह कि आज भी हिन्दी भारत की राजभाषा होते हुए भी अपना गौरवपूर्ण स्थान पाने के लिए संघर्षरत है। वर्षों तक यह परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा रहा भारत देश 15 अगस्त सन् 1947 को आजाद तो हुआ, लेकिन विदेशी भाषा अंग्रेजी आज भी दासता की बेड़ियों के रूप में भारतीय जनगण को अपने बंधन में जकड़े हुए है। इतना ही नहीं, केवल हिन्दी ही नहीं, भारत की अन्य प्रान्तीय व क्षेत्रीय उपभाषाओं को भी अंग्रेजी के मोहपाश ने फांसी के फन्दे पर लटका रखा है।

यही कारण है कि आजादी के लगभग 7 दशक बाद भी जन-जन की भाषा- हिन्दी भाषा सच्चे अर्थों में भारत की राजभाषा नहीं बन सकी है। दुर्भाग्य तो देखिये! आप महान गौरवशाली भारतीय राष्ट्र के महान नागरिक हैं जिसकी आज तक राष्ट्र भाषा नहीं है। अपितु अंग्रेजी हमारे सिर पर चढ़ी निरन्तर ताण्डव कर रही है तथा भारत को अन्दर ही अन्दर षड्यन्त्र पूर्वक तोड़ रही है। यह कैसा दुर्भाग्य है! भारतीय राजनेताओं ने अपने-अपने क्षेत्रीय स्वार्थ के चलते हुए हिन्दी को न केवल अभी तक राष्ट्रभाषा बनने दिया, अपितु राष्ट्र संघ (यू.एन.ओ) की भाषा अनुसूची में भी शामिल न होने दिया। राष्ट्र संघ (यू.एन.ओ.) की भाषाई अनुसूची में अनेकानेक छोटे-छोटे देशों और महाशक्तियों की भाषाएं शामिल हैं तो भारत जैसे विशाल देश की हिन्दी भाषा अभी तक शामिल नहीं है, क्यों?यह केवल भारतीय राजनेताओं और केन्द्र में शासनरत् राजनीतिक दलों की स्वार्थवादिता और दिशाहीनता के कारण संभव नहीं हुआ है। लगभग 4.6 मिलियन डालर राष्ट्र संघ (यू.एन.ओ.) में पंजीयन शुल्क के रूप में भारत सरकार को जमा करने थे, लेकिन यह आज तक नहीं हुआ। अब आपको इसके लिए भी संघर्ष करना होगा। यदि आप सभी से संघर्ष करेंगे, जनचेतना जागृत करेंगे तो आने वाली नई सरकार संभवत: इस महान सांस्कृतिक गौरव के कार्य को पूर्ण कर ले। इसलिए आज हम सजग होकर हिन्दी के सम्मान तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान के लिए भाषा के आग्रह को स्वीकार करना होगा। इसके लिए हमें सरकार को भी बाध्य करना होगा। समाचार पत्र-पत्रिकाओं, टी.वी. चैनलों तथा सभी शैक्षिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं को भी इस दिशा में आगे आना होगा।

राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है-

जिस दिन भारत के सभी लोग हिन्दी को अपना जानेंगे
जानेंगे ही नहीं वरन् हिन्दी में करके सफल काज सुख मानेंगे
बस उसी रोज़ दासत्व न रहने पाएगा
बस उसी रोज़ सच्चा स्वराज्य आ जायेगा।

जनवाणी — राष्ट्रपति को पत्र

स्वामी अग्निवेश जी को कमाण्डो सुरक्षा दी जाए

आदरणीय महामहिम राष्ट्रपति महोदय!
राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली।
श्री मान्यवर जी!

स्वामी अग्निवेश जी आर्य समाज के अनमोल रत्न हैं तथा विश्वविख्यात संन्यासी हैं। आर्यजगत को उन्होंने अपना जीवन ही नहीं, अनेकानेक देशहित सेवाएं दी हैं। विश्व में भारत व वेदों का डंका बजाया है। आज उन पर जो जानलेवा हमले हुए हैं, वे बड़े ही दुखद व चिन्ताजनक हैं। ये सब किसी योजना की साजिश हैं। उनके प्राणों की रक्षा राष्ट्रहित में है।

अत: आपश्री से सानुरोध प्रार्थना है कि उन्हें राष्ट्रीय कमाण्डो सुरक्षा दिलाई जावे। प्रभु आपको उचित व उत्तम सेवा का साहस देवे। सधन्यवाद।

आपका शुभेच्छुक
डॉ0 स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती, मनन आश्रम, पिण्डवाड़ा (राजस्थान)
स्टे0 सिरोही रोड, मोबा0 : 9413266245

गुरुकुल हरिपुर जुनानी (ओड़िशा)

संस्कार, संस्कृति, एवं संस्कृत की पावनी परम्पराओं को विश्व में अमिट बनाए रखने की दिशा में अन्य गुरुकुलों के समान ही गुरुकुल हरिपुर का योगदान भी अवर्णनीय है। इस गुरुकुल की स्थापना 1 मई 2010 को हुई। इन आठ वर्षों के कालखण्ड में गुरुकुल ने प्रत्येक क्षेत्र में नि:स्वार्थ होकर कर्तव्यभाव से नियमित वैदिक शिक्षा, वैदिक धर्म का प्रचार, विद्यार्थी निर्माण, सेवा, परोपकार, भारतीय क्रीड़ा, विभिन्न स्थानों में आर्य समाज की स्थापना, पुराने समाजों में जीवनदान आदि कार्यों से ओड़िशा ही नहीं, ओड़िशा के बाहर भी अपनी कीर्ति का विस्तार किया है।

गुरुकुल में सम्प्रति ओड़िशा, छत्तीसगढ़, झारखण्ड आदि प्रान्तों के 93 ब्रह्मचारी हैं। छठवीं से लेकर बी0ए0 प्रथम वर्ष तक की कक्षाएं चल रही हैं। संस्कृत विद्यामण्डलम् रायपुर द्वारा आयोजित 2017 के वार्षिक परीक्षा में 29 ब्रह्मचारियों ने परीक्षाएं दी थीं। उनमें से 25 प्रथम श्रेणी, एवं 4 ब्रह्मचारी द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। वैसे ही आठवीं तक की परीक्षाओं में 56 विद्यार्थियों ने परीक्षा अच्छे अंकों में उत्तीर्ण की।

इस वर्ष ओड़िशा के विभिन्न जिलों में भारतीय व्यायाम क्रीड़ा प्रदर्शन हेतु ब्रह्मचारी गये, विश्व योग दिवस 21 जून के कार्यक्रम को संचालित करने लगभग 20 स्थानों पर हमारे आदरणीय आचार्यगण एवं सौम्य ब्रह्मचारी गये हुए थे। इसी प्रकार ओड़िशा एवं ओड़िशा के बाहर अनेक स्थानों में यज्ञ, भजन, प्रवचन के कार्यक्रम सम्पन्न कराये। यहां के ब्रह्मचारियों ने पुरी में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित अष्टाध्यायी कण्ठस्थ प्रतियोगिता में भाग लेकर तृतीय स्थान, भुवनेश्वर में आयोजित वेदपाठ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान, दिल्ली में आयोजित वेदमंत्र, गीतापाठ एवं तद्विषयक भाषण प्रतियोगिता में सर्वतृतीय स्थान प्राप्त करके गुरुकुल को गौरवान्वित किया। इसी प्रकार यहां अध्ययनरत ब्रह्मचारी आवर्ष अपने बगीचे से ही अपने एवं पूजनीय आचार्य, अतिथि, साधु-सन्तगण के लिए सब्जी उगाते हैं। दूध दुहना, तक्र तैयार करना, घी बनाना आदि का सफल पवित्र सेवा कार्य उन्हीं के द्वारा किया जाता है।

गुरुकुल की विभिन्न गतिविधियों, सेवाओं और आर्ष विद्या के प्रचार-प्रसार से प्रभावित होकर गुरुकुल के सुंचालक डॉ0 सुदर्शन देव आचार्य को परोपकारिणी सभा, ऋषि उद्यान अजमेर में 2016 में 'वेद-वेदांग पुरस्कार' से पुरस्कृत किया गया, जिसमें पच्चीस हजार की राशि एवं स्मृतिचिह्न प्रदान किया गया तथा अभी-अभी आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुबई की ओर से 'पं0 युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार' मिला, जिसमें तीस हजार रुपये की राशि, शाल एवं श्रीफल प्रदान किया गया। इसी प्रकार ओड़िशा का प्रथम वैदिक गुरुकुल वेदव्यास राउरकेला में आयोजित स्वामी ब्रह्मानन्द शतवार्षिकी जयन्ती समारोह में भी आचार्य जी को 'आर्य विभूषण सम्मान' से सम्मानित किया गया। यह गुरुकुल निरंतर धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक सेवा व परोपकार के विभिन्न सेवा प्रकल्पों को अपने स्तर पर गति देता रहता है।

बाधाएं कब बांध सकी हैं आगे बढ़ने वालों को। विपदाएं कब रोक सकी हैं मरकर जीने वालों को।। इन पंक्तियों के अपने हृदय में स्थान दिये यहां के आचार्यगण अपने क्षण-क्षण, कण-कण को राष्ट्र के लिए आहुत किये हुए हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझते हुए इस गुरुकुल को आर्यजगत में नई पहचान बनाने में सफल हुए, ये सभी श्रद्धेय आचार्य दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य राजेन्द्र कुमार वर्णी, आचार्च श्रुतिप्रिय उपाध्याय अभिनन्दनीय हैं। आचार्यगण ने संकल्प लिया है कि गुरुकुल की सुन्दर और चिन्तामुक्त अवस्था के लिए 'एक करोड़ की स्थाई गुरुकुल सुरक्षा निधि बनाई जाये।' इसके लिए दानी सज्जनों से निवेदन है कि एक कदम गुरुकुल की सुरक्षा के लिए बढ़ें। अधिष्ठाता सदस्य- एक लाख, सम्मानित सदस्य- पचास हजार एवं समादृत सदस्य- पच्चीस हजार देकर परोपकार के अर्थ को सार्थक करें।

नियमित स्तंभ : 'हमारे गुरुकुल'

आर्यावर्त केसरी भारतवर्षीय गुरुकुलों पर शीघ्र ही एक भव्य विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है। साथ ही, 'हमारे गुरुकुल स्तंभ' के अन्तर्गत भारत के गुरुकुलों के विषय में मूल्यवान परिचयात्मक सामग्री प्रकाशित की जा रही है। अतः गुरुकुलों के संस्थापकों, अधिष्ठाताओं, कुलपतियों तथा आचार्यजनों से अनुरोध है कि अपने गुरुकुलों का इतिवृत्त (संक्षिप्त परिचय) चित्र सहित यथाशीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि इनका समुचित समायोजन करते हुए विशेषांक को भव्य स्वरूप प्रदान किया जा सके।

धन्यवाद, —सम्पादक

आपका सहयोग अपेक्षित है : आप अपनी सहयोग राशि आचार्य गुरुकुल हरिपुर के नाम से चैक या ड्राफ्ट द्वारा भेज सकते हैं। अथवा भारतीय स्टेट बैंक नुआपाड़ा कोड सं0 6078, IFSC : SBIN0006078 के खाता क्रमांक 32201200324 में जमा कर सूचना देने की कृपा करें। संस्था का पैन नं0 AAAAJ9932H है। ध्यान रहे गुरुकुल को दिया गया दान पर आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

ऋषिराज तेज तेरा चहुँ ओर छा रहा है- तेरे बताए पथ पर संसार आ रहा है।

गुरुकुल स्थित यज्ञशाला के समक्ष ब्रह्मचारी यौगिक क्रियाओं का प्रदर्शन करते हुए

गुरुकुल के पदाधिकारीगण : जयदेव आर्य- **प्रधान**, खुशहालचन्द्र आर्य- **संरक्षक**, सुरेश चुघ- **कुलपिता**, मनजीत कुमार शास्त्री- **मंत्री**, डॉ0 सुदर्शन देव **आचार्य- संचालक**, दिलीप कुमार जिज्ञासु- **आचार्य**, राजेन्द्र कुमार वर्णी- **उपाचार्य**, सोमनाथ पात्र- **उपप्रधान**, सिद्धेश्वर पंडा- **विशेष संरक्षण।**

गुरुकुल हरिपुर, ग्राम- जुनानी, पोस्ट- गोड़फूला, जिला- नुआपाड़ा (ओड़िशा)-766105
दूरभाष- 9437188321, 9777453714, 9178371663, 8658834231
Email : gurukulharipur@rediffmail.com, Website : www.gurukulharipur.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रज्ज्वलित समग्र राष्ट्रोत्थान की क्रान्तिकारी अग्नि में

बलिदान देने वाले कुछ आर्य शहीदों का परिचय- एक दृष्टि में

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के दस नियम और उद्देश्य बनाकर संसार के सम्मुख एक सर्वोच्च आदर्श की स्थापना की। इसके छठे नियम में कहा गया है कि 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक, और सामाजिक उन्नति करना।'

महर्षि दयानन्द जी इस युग के निर्माता और विधाता थे। वे आदित्य ब्रह्मचारी, ब्रह्मर्षि, सब वेदांगों के प्रकाण्ड पंण्डित, महान विद्वान, आदर्श वक्ता, निर्भीक और महान लेखक थे। आर्य समाज के बैनर तले उन्होंने धर्म व राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपने अमूल्य प्राणों व जीवन की बलि चढ़ाकर बलिदान का द्वार खोल दिया। आर्य समाज का इतिहास बलिदानों का इतिहास है। कोहाट के दंगे, मालावर का मोपलाकाण्ड, नवाखली में अत्याचार और पाकिस्तान बनने पर 1947 में पाकिस्तान में अत्याचारों की कहानी और हजारों आर्य वीरों के बलिदान को आज कौन लिख सकता है।

इतिहास गवाह है महर्षि दयानन्द की प्रेरणा व आर्य समाज के बैनर तले अस्सी प्रतिशत आर्यो ने अपना बलिदान दिया था और परतन्त्र भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपना महा योगदान दिया था। महर्षि दयानन्द जी कहते हैं, कि जो जितना गहराई से पिछला इतिहास पढ़ेगा, उतना ही आगे इतिहास बनायेगा। स्वामी ओमानन्द सरस्वती द्वारा लिखित ग्रन्थ आर्य समाज के बलिदान" में से कुछ बलिदानियो का परिचय मात्र इस लेख में सुधी पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं भारत सुधार में कुछ आर्य बलिदानियों की सूची :–

1. श्री दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती– जन्म 1778 ई0 दिवंगत 1868 ई0।
2. महर्षि दयानन्द सरस्वती– जन्म संवत् 1881 वि0 और बलिदान संबत 1940 वि0।
3. पं गुरुदत्त विद्यार्थी– जन्म 1864 ई0 मुल्तान ग्राम दिवंगत 19 मार्च 1890 ई0।
4. पं धर्मवीर पंडित लेख राम– जन्म 1915 संवत वि0 बलिदान 7 मार्च 1897 ई0।
5. स्वामी श्रद्धानन्द– जन्म ग्राम जालन्धर सं0 1856 बलिदान 23 दिसम्बर 1926 ई0।
6. अमर हुतात्मा भक्त फूलसिंह– जन्म महरा रोहतक खेड़ी सं0 1888 दिवंगत 1942 मुसलमानों की गोली से हुआ।
7. पूज्य पं0 बस्तीराम– जन्म तिथि अज्ञात जिला गुरदासपुर, रूडा बलिदान सं0 1930 ई0।
8. पंडित तुलसीराम– जन्म तिथि अज्ञात स्थान जि0 गुरदासपुर ग्राम रूडा में बलिदान सं0 1903 में।
9. वीर रामचन्द्र– जन्म सं0 1953 कठुआ हीरानगर वीरगति संवत् 1979।
10. महाराय राजपाल– जन्म सं0 1942 अमृतसर बलिदान 6 अप्रैल 1929 सं0।
11. सरदार धुन्ना सिंह– जन्म 1881 ई0 खताला लुधियाना, समाज सुधार करते हुए विरोधियो की लाठियों से दिवंगत।
12. ला0 लोरिन्दाराम– जन्म सन 1886 बन्नू बलिदान 6 नवम्बर सं0 1934।
13. विद्यासागर– जन्म सं0 1975 सोई जिला जेहलम बलिदान 19–04–1939 ई0।
14. हुतात्मा श्यामलाल– जन्म 1903 ई0 भालकी हेदराबाद व बलिदान प्रचार करते हुए।
15. भाई वंशीलाल– जन्म जि0 बदिर मणिक नगर अपका बलिदान आर्ष शिक्षा पद्धति करते हुए।
16. हुतात्मा सुनहरा– जन्म जिला रोहतक ग्राम वुटाना मे–ओरंगाबाद सत्याग्रह के कारण मुत्यु हई।
17. अमर शहीद परमानन्द– जन्म हरद्वार बलिदान सत्याग्रह मे 1–4–1939।
18. महाधन श्री फकीर चन्द– जन्म करनाल त0 कैथल मेरधड, मृत्यू 30 जून 1939।
19. ब्रह्मचारी दयानन्द– जन्म सं0 1919 हरदोई सुरसाग्राम बलिदान 9 मार्च 1940।
20. अमर शहीद श्री नन्हू सिंह– जन्म बुन्देलखण्ड–दिवंगत 25–05–1939 ई0 सं0।
21. लाला नन्द लाल– जन्म 1908 लाहौर बलिदान 15 नवम्बर 1927 सं0।
22. श्री शान्ति प्रकाश– जन्म संवत 1978 ग्रा0 कलानैर गुरदासपुर दि0 27–03–1939 सं0।
23. चौ0 मातुराम– जन्म संवत 1946 ग्राम मलिकपुर जि0 हिसार–हेदराबाद सत्याग्रह दि0 28–07–1939
24. भक्त अरूडामल जी जन्म 1910 मे आर्य समाज में प्रवेश शरीरान्त 9 अगस्त 1939 सं0।
25. श्री रतिराम– जन्म ग्राम सावला जि0 रोहतक–दिवंगत 25–08–1939 सं0।
26. श्री परमानन्द– जन्म 7 अप्रैल 1920 डेरागाजी खां बलिदान 26 मई 1944 सं0।
27. साहूकार पालमल– जन्म ममटोट फिरोजाबाद दिवंगत मुसलमान द्वारा।
28. देवकीनन्दन– जन्म जिला कैम्बलपुर मखड् ग्राम–मुसलमानों द्वारा बलिदान।
29. मुरली मनोहर– जन्म कन्दहार–बलिदन मुस्लिम पठानो द्वारा निर्मम हत्या।
30. बाबू नारायण सिंह– जन्म सन 1868 पटना नगर धर्म की वेदी पर बलिदान।
31. श्री छोटेलाल– जन्म संवत 1961 में अलालपुर मेनपुरी, हैदराबाद सत्याग्रह से दिवंगत।
32. बीरवर बदन सिंह– जन्म सन 1921 में सहारनपुर मुजफराबाद सत्याग्रह में दिवंगत 1939 ई0।
33. श्री ठाकुर मल्खान सिंह– जन्म रामपुर ग्राम रूडकी स्वतन्त्रता प्रेमी 1 जुलाई 1939 दिवंगत।
34. स्वामी कल्याणानन्द– जन्म 1874 ई0 मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश में वेदप्रचार करते हुए दिवंगत।
35. महाधन चौधरी ताराचन्द– जन्म संवत 1973 ग्राम लूम्ब मेरठ–दिवंगत 2 सितम्बर 1939 ई0।
36. श्री अशर्फीलाल– जन्म 18 वर्ष की आयु में हैदराबद सत्याग्रह से 19 अगस्त 1939 ई0।
37. धर्मवार श्री पुरूषोतम जी ज्ञानी– जन्म 1867 ई0 देहावसान 26 अगस्त 1939 ई0।
38. हुतात्मा वेद प्रकाश– जन्म संवत 1827 गुज्जोरी, पायगा, संवत 1934 बलिदान।
39. महाधन धर्मप्रकाश– जन्म शाके 1339 कल्याणी ग्राम बलिदान 27 जून 1938 ई0।
40. धर्मवीर महादेव 25 वर्ष की अवस्था में 14 जलाई 1938 ई0 को बलिदान।
41. हुतात्मा व्यंकटराव सत्याग्राही जेल में 8.4.1939 बलिदान।
42. श्री विष्णु भगवान– सत्याग्रह में 25–05– 1939 को बलिदान।
43. श्री माधवराव सदाशिव राव स्वतंत्रता आन्दोलन में गुलवर्गा जेल 25 मई बलिदान।
44. श्री पाण्डु रंग 22 वर्ष की आयु में सत्याग्रह 25 मई 1939 देहावसान।
45. श्री हुतात्मा राधाकृष्ण जन्म 1953 हैदराबद ईसा मिया बाजार 2–8–1939 को बलिदान।

नोट : कलेवर बढ़ने के कारणक केवल बलिदानियो के नाम अंकित कर रहे है– श्री लक्ष्मरणराव जी, महाधन शिवचन्द, रामाकृष्ण, श्री भीमराव जी श्री माणिक राव जी, श्री सत्यनारायण, श्री महादेव, महाधन अर्जुन सिंह, श्री गोविन्दराव नलन्ना, श्री गोवन्दराव लक्ष्मणराव नलगीर जी, श्री स्वामी सत्यानन्द जी, शहीद पुरूषोत्तम दास मंगनलाल शाह, महाधन खण्डेराव गण्पतराव जगताप, महाधन सदाशिव राव पाठक, महाधन रामनाथ, महाधन नाथूराम जी, वीरवर नारूमल जी, महाधन नेवदराम, श्री भैरो सिंह जी, आर्य वीर, श्री मेघराज जी, श्री जयराम, महाधन राधाकृष्ण, श्रीयुत बृजलाल आर्य, श्री स्वामी स्वतन्यानन्द जी, महाराज, श्री पं वंशीलाला व्यास, श्री स्वामी योगानन्द जी सरस्वती, श्रद्धेय स्वामी ब्रह्ममानन्द जी महाराज, श्री पं विश्वासदास जी, आर्यवीर सुखराम जी, महात्मा सुमेर सिंह जी, चौ0 माईघन, स्वामी नित्यानन्द जी, श्री सुबेदार शिवलाल जी आर्य, श्री शेर सिंह जी, वीर शहीद सुमेर सिंह जी, पो0 किशोरीलाल जी, श्री साधु अजरानन्द जी, विद्वान ब्रह्मचारी पं विक्रम जी, वीर ब्रहमचारी पं हरिशरण जी, ब्र0 नरदेव, ब्र0 विद्यावृत जी, ब्र0 बृहस्पति जी, महाशय धर्मपाल जी आदि–आदि।

निवेदन– आर्य समाज के राष्ट्रीय, समाजिक उत्थान में बलिदानियों की लम्बी श्रखंला है जिसका एक बहुत बडा ग्रन्थ बन सकता है। गहन स्वध्याय से मुझे यह लगा कि आर्य जगत मे उक्त बलिदानियो को बहुत कम जानते है। स्वामी ओमानन्द जी ने अधिकांश उनका ही नाम दिया है आर्य वीरो के मुख्य 2 बलिदानियो को तो सभी जानते हे। स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर उक्त आर्य बलिदानियो को हम शत–शत नमन करते है।

नोट : यह परिचय सूची– "आर्य समाज के बलिदान" नामक ग्रन्थ (लेखक– स्वामी ओमानन्द सरस्वती) से ली गयी है।

पं0 उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक,
गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून उत्तराखण्ड
मो. : 9411512019, 9557641800

देश–विदेश में प्रसारित होने वाले
आर्यावर्त केसरी
में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने–कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने व्यक्तिगत विज्ञापन, शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित कराकर लाभ उठायें।

विज्ञापन दर इस प्रकार है-

पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क- 12000/- रुपये
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क- 6500/-
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क- 3500/-

स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है।

-प्रबन्धक (विज्ञापन), मोबा. : **8630822099**

आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य की स्मृति में स्मारिका-प्रकाशन

आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य–जगत की एक प्रख्यात विभूति थे। वे जीवनपर्यन्त 'वानप्रस्थ साधक आश्रम' के विभिन्न प्रकल्पों के लिए समर्पित रहे। उनके विस्तृत कार्यो ने देश-विदेश को प्रभावित किया है। उनकी कार्यशैली, मार्गदर्शन, योजनाएं दीर्घावधि तक सहस्रों व्यक्तियों को प्रेरित करती रहेंगी। हम सभी व्यक्तियों की स्मृतियां उनके पावन संस्मरण से आप्लावित हैं। हमारी इच्छा है कि आचार्य ज्ञानेश्वर जी से संबन्धित अविस्मरणयी प्रेरक संस्मरणों को स्मारिका के रूप में प्रकाशित किया जाए। इस संदर्भ में आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप अपने संस्मरण को लेखबद्ध करके और यदि उनका कोई विशेष चित्र हो, तो वह भी कृपया हमें यथाशीघ्र प्रेषित करें, ताकि वानप्रस्थ आश्रम की इस अभिलाषा में आपका पुनीत सहयोग प्राप्त हो सके। आप अपने लेख और विशेष चित्र को ई-मेल अथवा पत्र-व्यवहार के माध्यम से प्रेषित कर सकते हैं।

पत्र व्यवहार का पता :
वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, पत्रा0- सागपुर,
जिला- साबरकांठा (गुजरात)- 383307
E-mail id- vaanaprastharojad@gmail.com

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर, विजिटिंग कार्ड आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध है।

-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, अमरोहा
मोबा. : 9412139333

ऐसे होते हैं आर्य

आर्यत्व के प्रतीक

प्रदीप वर्मा 'प्रताप'

सम्भल (उत्तर प्रदेश)

आर्य समाज के अनन्य सेवक, याज्ञिक, समर्पित समाजसेवी, निष्ठावान तथा सरल, सहज हृदय के धनी, उदारमना, सम्भल (उ.प्र.) निवासी श्री प्रदीप वर्मा एक विलक्षण व्यक्तित्व के धनी हैं। नगर के प्रतिष्ठित व्यवसायी प्रदीप जी द्वारा मैसर्स वर्मा आभूषण केन्द्र, वर्मा ज्वैलर्स तथा वर्मा ट्रेडर्स जैसे प्रतिष्ठान संचालित हैं। आपके द्वारा प्रतिवर्ष अपने आवास- वर्मा भवन, मौहल्ला ठेर, निकट आर्य समाज सम्भल में एक वेद का महापारायण यज्ञ आयोजित किया जाता है।

इस वर्ष भी आपके द्वारा दिनांक 6 से 8 जनवरी तक ऋग्वेद महापारायण यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में पधारे। गुरुकुल पूठ के ब्रह्मचारियों ने वेदपाठ किया, साथ ही डॉ0 धीरज सिंह व वीरेन्द्र रत्नम अतिथि रहे और संजीव रूप वेद कथाकार ने भजनोपदेश किया। श्री वर्मा जी प्रतिवर्ष यज्ञोपरान्त श्रद्धापूर्वक ऋषिलंगर की व्यवस्था भी करते हैं। साथ ही बड़ी संख्या में आर्ष साहित्य का नि:शुल्क वितरण करते हैं। आपके सौजन्य से आर्यावर्त प्रकाशन द्वारा 'दयानन्द लघु ग्रन्थ संग्रह' का प्रकाशन भी किया गया है। आपके द्वारा बड़ी संख्या में इस ग्रंथ के साथ ही सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रंथों का भी निशुल्क वितरण किया गया है। आप एवं आपके परिजनों द्वारा नित्यप्रति पंचमहायज्ञ का अनुपालन किया जाता है। आपके इसी व्यक्तित्व के कारण नगर व क्षेत्र में अपकी एक विशेष पहचान है।

नियमित कॉलम

ऐसे होते हैं आर्य

सम्माननीय पाठकवृन्द!

हम आपके प्रिय व वैदिक संस्कृति के संवाहक आर्यावर्त केसरी में **'ऐसे होते हैं आर्य'** नाम से एक नियमित कॉलम प्रकाशित किया जा रहा है। अत: प्रबुद्ध आर्यजनों से निवेदन है कि ऐसे श्रेष्ठ महानुभावों, जिन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ आवाज़ उठायी है व समाज हित में अच्छे कार्य किये हैं, जिनसे कि आमजन प्रेरणा ले सकें, से सम्बन्धित जानकारी, उनके नाम व पते तथा एक रंगीन पासपोर्ट साइज़ फोटो सहित भेजने का कष्ट करें। धन्यवाद,

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी,
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)
मोबा. : 9412139333

दर्शन योग महाविद्यालय में

प्रवेश हेतु सूचना

आर्य जगत के महान योगी स्वामी श्री सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा सन् 1986 ई0 में स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ उच्च स्तर के योग प्रशिक्षकों तथा वैदिक दार्शनिक विद्वानों के निर्माण कार्य में संलग्न है। इस महाविद्यालय में प्रवेश के इच्छुक ब्रह्मचारी शीघ्र सम्पर्क करें।

प्रवेश के लिए योग्यता :,
प्रवेश केवल ब्रह्मचारियों (पुरुषों) के लिए।
आयु- कम से कम 18 वर्ष।
शैक्षणिक योग्यता- कम से कम 12वीं या समकक्ष।
व्याकरणाचार्य, शास्त्री या स्नातक को वरीयता।

विशेषताएं :

प्रत्येक ब्रह्मचारी को विद्यालय में भोजन, आवास, वस्त्र, आसन, घी-दूध, फल, पुस्तक, चिकित्सा आदि की उत्तम व्यवस्था नि:शुल्क उपलब्ध है। प्रतिदिन व्यक्तिगत उपासना के लिए अवसर उपलब्ध है। प्रतिदिन यज्ञ, वेदपाठ, वेदस्वाध्याय, आत्मनिरीक्षण आदि होता है। क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के माध्यम से विवेक-वैराग्य, स्व-स्वामि-संबन्ध (ममत्व) को हटाना, ईश्वर-प्रणिधान, मनोनियंत्रण, यम-नियम, ध्यान, समाधि आदि विषयों का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रतिदिन आध्यात्मिक उन्नति के लिए कुछ घण्टे मौन पालन का अवसर उपलब्ध है।

सम्पर्क हेतु पता :
दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़, पत्रा0- सागपुर, ता0- तलोद, जिला- साबरकांठा, गुजरात- 383307
फोन : (02770) 287518, मोबा0 : 9409415011, 9409415017
E-mail : darshanyog@gmail.com,
Web : www.darshanyog.org

अनार

स्वास्थ्य जगत

हरिश्चन्द्र आर्य

आयुर्वेदिक मत :

अनार तीनों दोषों को दूर करने वाला तथा तृषा-दाह और ज्वर में लाभदायक है। यह पित्तनाशक है। वायु प्रकृति वालों को उत्तम है। खट्टे अनार स्निग्ध ग्राही रुचि उत्पन्न करने वाले और जठराग्नि को प्रदीप्त करते हैं। पित्त नाशक स्तम्भक है। अनार पित्त प्रकोप, अरुचि, अतिसार, खांसी, नेत्रदाह, छाती का दाह, व्याकुलता दूर करता है। कोमल सूखे अनार रुचिकर, वायु का अनुलोभन करते हैं। अनार में ग्राही गुण अच्छी मात्रा में है। अनार का रस फेफड़ों, हृदय, यकृत, आमाशय, आंतों पर विशेष गुणकारी है।

मीठा अनार तीनों दोषों को हरने वाले तृप्तिदायक, वीर्यवर्धक, लघु, कसीले, स्निग्ध, घृणा, दाह, ज्वर, हृदय रोग में लाभदायक है।

वैज्ञानिक मत :

रासायनिक संगठन- अनार के दानें में 78 प्रतिशत जल, 16 प्रतिशत प्रोटीन, 1 प्रतिशत वशा, 5.1 प्रतिशत तन्तु, 14.5 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, तथा 0.7 प्रतिशत खनिज पदार्थ होता है। इसके 100 ग्राम भार में 10 मिग्रा0 कैल्सियम, 12 मिग्रा0 मैग्नीशियम, 70 मिग्रा0 फास्फोरस, 0.3 मिग्रा0 लोहा, 0.9 मिग्रा0 सोडियम, 0.2 मिग्रा0 तांबा, 12 मिग्रा0 गन्धक, 2 मिग्रा0 क्लोरिन, 06 मिग्रा0 थायमीन, 0.30 प्रतिशत निकोटिनिक ऐसिड और 14 मिग्रा0 एस्कोर्विक एसिड या विटामिन सी होता है। इनके अतिरिक्त 14 मिग्रा0 आक्जैलिक एसिड होता है।

अनार के रस में अम्लता 0.45 ग्राम से 3.47 ग्राम प्रति 100 मि0ली0 तक होती है। अनार का छिलका पाचन शक्ति बढ़ाने वाला होता है।

यूनानी मत :

अनार का छिलका ग्राही, जंतुघ्न, पाचक, कफहर और शामक है। इसके मादे की मूल की छाल अत्यन्त ग्राही और कृमिघ्न है। पेट में होने वाले लम्बे कृमि के लिए यह अत्यंत प्रमाणभूत औषधि है। अनार वृक्ष की मूल की 5 तोला तरोताजा छाल के 2 पौंड पानी में डालकर एक पौंड पानी रहने तक उबालिए। फिर नीचे उतार कर ठंडा होने पर एक एक प्याला पानी पीने से पेट के कृमि बाहर निकल जाते हैं। अनार दाने और दानों का रस पेट की पीड़ा को नष्ट करते हैं। इसके फूल ग्राही है।

उपयोग :

1. पका अनार खाने से दबी हुई आवाज खुलती है।

2. अनार के छिलके का टुकड़ा मुंह में रखकर उसका रस चूसने से खांसी दूर होती है।

3. अनार की छाल सूखी आधा तोला बारीक कूटकर कपड़े से छानकर उसमें एक रत्ती कपूर मिला लें। हय चूर्ण दिन में दो बार पानी के साथ देने से भयंकर त्रासदायक खांसी मिट जाती है।

4. अनार के छिलके, छाल सौंदर्यवर्धक होते हैं। इन्हें सुखा तथा पीसकर बारीक पावडर बनाकर गुलाब जल के साथ मिलाकर उबटल की तरह लगाने से शरीर के दाग एवं चेहरे की झाइयां नष्ट हो जाती हैं।

5. अनार की छाल का विशेष रूप से फीता कृमि पर प्रभाव होता है। फीता कृमि के मामले में 100 ग्राम अनार की ताजी छाल को 200 ग्राम पानी में उबालें। आधा रह जाने पर छानकर रोगी को खाली पेट 100-100 ग्राम हर आधे घंटे में चार बार पिलायें तथा देर पश्चात् एक औंस (25 मिलीली0) अरण्ड तेल पिलायें। ऐसा करने पर कृमि मर कर बाहर निकल जाते हैं।

6. अनार का छिलका 80 ग्राम तथा सेंधा नमक 10 ग्राम दानों को खूब महीन पीसकर कपड़छन कर लें तथा इस चूर्ण में पानी मिलाकर मटर के बराबर गोलियां बनाकर छाया में सुखा लें, प्रतिदिन सुबह, दोपहर, शाम दिन में तीन बार एक एक गोली मुंह में डालकर चूसने से कुछ ही दिनों में खांसी दूर हो जाती है।

7. ज्वर में अनार को पथ्य के रूप में दिया जाता है।

8. रक्त पेचिस में 15 ग्राम अनार के सूखे छिलके और 2 लौंग दोनों को पीसकर एक गिलास पानी में 10 मिनट तक उबालें। फिर छानकर आधा कप रोजाना दिन में तीन बार पियें। अनार पथ्य फूल है। अत: रोगियों के लिए हितकारी है। अनार खाने से शरीर में एक विशेष प्रकार की चेतना तथा स्फूर्ति आती है। अनार, इसका छिलका, पत्ते, फूल, मूल एवं वृक्ष और मूल की छाल इन सभी का औषधि के रूप में प्रयोग होता है।

9. अनार खाने से भोजन जल्दी पचता है। इसमें पाया जाने वाला साइट्रिक अम्ल पाचन क्रिया को तीव्र करता है।

10. 100 ग्राम अनार के रस में 16 मिलीग्राम विटामिन सी होता है।

अधिष्ठाता- उपदेश विभाग
प्रचार कार्यालय,
काली पगड़ी, अमरोहा

जुकाम में असरकारक है काली मिर्च

शकुन्तला देवी

मौसम बदलने के साथ ही मनुष्य के शरीर में भी परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इनमें से सबसे प्रमुख बीमारी जुकाम है, जिसके लक्षण सामान्यत: अधिकतर लोगों में दिखाई पड़ते हैं। अगर घरेलू उपचार के तरीके अपनाए जाएं, तो जुकाम से बचा जा सकता है।

♦ सूखी खांसी में काली मिर्च तथा मिश्री को मुंह में रखने से लाभ होता है।

♦ गले में खराश हो, तो काली मिर्च चूसें।

♦ संतरे के रस में सेंधा नमक व काली मिर्च मिलाकर उसका नियमित सेवन करने से आंखों की ज्योति बढ़ती है।

♦ काला नमक, काली मिर्च व जीरा पीसकर उसे गर्म कर लें। पेट में कीड़े हों, तो चूसने से आराम मिलता है।

♦ मलेरिया होने पर काली मिर्च और कुटकी का चूर्ण बना लें। उसे शहद तथा तुली के रस के साथ लेने से लाभ होता है।

♦ खाने के प्रति अरुचि हो, तो काला जीरा, अनारदाना, सफेद भुना हुआ जीरा, काली मिर्च, मुनक्का, अमचूर तथा कालानमक (10-10 ग्राम) को पीसकर चूर्ण बनाएं व इसे शहद के साथ खाएं।

♦ पुराने जुकाम में खट्टा दही, गुड़ व काली मिर्च का चूर्ण तीनों का मिश्रण कर, सेवन करने से लाभ होता है।

♦ बलगम होने पर 8-10 काली मिर्च पीस लें। इसमें नमक मिलाकर सूंघने से बलगम पानी होकर बह जाता है।

♦ अदरक का रस, काली मिर्च तथा नींबू का रस, तीनों को मिलाकर बच्चों को चटाने से उनकी हिचकी बंद हो जाती है

♦ सांस के रोगों में काली के अर्क का सेवन लाभप्रद है।

♦ काली मिर्च, भुना जीरा, हींग, प्याज का रस व सेंधा नमक मिलाकर इसका सेवन करने से हैजा दूर होता है।

-आर्यावर्त कॉलोनी, अमरोहा

महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा (गुजरात) में

बोधोत्सव का भव्य आयोजन

आर्यजनों को जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में भी महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन रविवार, से मंगलवार अर्थात् 3 से 5 मार्च 2019 तक किया जाएगा। आपसे निवेदन है कि आप इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

-रामनाथ सहगल, मंत्री

जीवितों में ही हो सकता है श्राद्ध और तर्पण

सुमन कुमार 'वैदिक'

हमारे यहां आश्विन माह के कृष्ण पक्ष के पन्द्रह दिनों को कनागत या पितृपक्ष कहा जाता है। इन दिवसों में मृत सम्बन्धियों के नाम पर पण्डितों को भोजन कराने, उन्हें दान देने की परम्परा है। ऐसी मान्यता है कि जो भोजन व दान आदि हम इन पण्डितों को, जिसका जन्म पण्डित कुल में हुआ है, करा रहे हैं, वह मृतक पितरों को परलोक में प्राप्त कराकर उन्हें तृप्त करेगा। हमें अपने पितरों के प्रति लगाव होता है। हमारी भावनाओं का इमोशनल ब्लैकमेल पण्डित लोग पाखण्ड, अंधविश्वास व भय दिखाकर करते हैं। इन दिनों को अशुभ बताकर कोई नया काम न करने को कहते हैं। क्या हमारे पितर अशुभ थे, और हमारा अहित चाहते हैं कि इन दिनों हम कोई कार्य भी न करें। सिर्फ उनके नाम पर मृतक की तिथि के अनुसार पण्डितों को अच्छे व्यंजन वस्त्र व दान देना ही क्या श्राद्ध है? जो मृतक पितरों को नहीं पहुंचता, किंतु पण्डित-पण्डों के उदर और घर अवश्य भर जाते हैं। चतुर, धूर्त, कर्मकाण्डी पण्डित कहते हैं कि जिस प्रकार यज्ञ में दी गयी आहुति, मूर्ति पर चढ़ाया गया प्रसाद भगवान पर पहुंचता है, उसी प्रकार पितरों के नाम पर दिया गया दान और भोजन उनके पास पहुंचता है। यदि प्रतिवर्ष श्राद्ध न किया जाए, तो तुम्हारे पितर भूखे तड़पेंगे और यहां तुम ऐश्वर्य भोग रहे हो, क्या यह उचित है? यदि बार-बार श्राद्ध नहीं करना चाहते, तो एक बार गया जाकर पिण्डदान करना पड़ेगा। वह मैं कर दूंगा। खर्च आपको देना होगा। कुछ लोग तो उधार लेकर पितरों के प्रति आस्था और प्रेम के कारण या कुछ लोकलज्जा के कारण श्राद्ध कराते हैं। जब हम घर से बाहर जाते हैं, तब हमारे नाम से ब्राह्मण को भोजन कराने से हमारी भूख शान्त नहीं होती, फिर जो शरीर जला दिया गया हो, उस तक भोजन कैसे पहुंचता है, जिसका पता-ठिकाना न पण्डित को पता है, न उसके पुत्रों को? हां कौओं को भोजन इस भाव से कराते हैं, कि पितर उस रूप में आया है। तब पण्डित को भोजन, वस्त्र, धन क्यों देते हैं? क्या सत्य है और क्या झूठ, इसकी परीक्षा किये बिना श्राद्ध की परम्परा हमारे समाज में चली आ रही है। हमें यह भी समझाया गया है कि यदि हम अपने पितरों का श्राद्ध करेंगे, तो हमारे पुत्र उसे देखकर, सीखकर भविष्य में हमारा श्राद्ध करेंगे। प्रायः देखने में आता है कि जिन माता-पिता को जीवित रहते भोजन दवाई ठीक से नहीं दी जाती, उन्हें कटु बोला जाता है, उनके पुत्र-पौत्र उनके मरने के बाद समाज को दिखाने के नाम पर श्राद्ध में बहुत सा धन व्यय करते हैं। श्राद्ध किसका करते हो भाई? मृतक पितर के शरीर का या आत्मा का? शरीर भस्म हो चुका है और आत्मा न वस्त्र पहनती है, न भोजन करती है। जीवित का श्राद्ध होता है, मृतक का नहीं। श्राद्ध नाम है श्रद्धा काश्रद्धा विवेकी पुरुष पर की जाती है, जिसके आशीर्वाद से मनुष्य का उत्थान होता है, उसको आत्म जीवन मिलता है। मृत्यु क्या पदार्थ है, मृत्यु केवल अज्ञान का भाव है। कोई पदार्थ नहीं है। शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु नहीं है। जैसे मनुष्य धारण किये हुए वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्रों को धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा एक शरीर रूपी वस्त्र को त्यागकर कर्मों और संस्कारों के अनुकूल नवीन शरीर रूपी वस्त्र को धारण कर लेता है। और जब वह मुक्ति में परमात्मा की गोद में पहुंच जाता है, तो उसे किसी प्रकार के वस्त्र की आवश्यकता नहीं रहती, इसलिए मृतक का श्राद्ध करना अज्ञान का मूल है। भगवान राम, श्रीकृष्ण, महाराज शिव, हनुमान, गणेश आदि देवी-देवताओं के जन्मदिन ही मनाते आ रहे हैं, उनकी पुण्यतिथि कोई नहीं मनाते। आज व्यक्ति तर्क देते हैं कि श्राद्ध जीवित पितरों का नहीं, जिनकी मृत्यु हो चुकी है, उनका किया जाता है। वास्तव में न हम अपने शरीर को जानते हैं, न ही आत्मा को। मोह-ममता में बुद्धि जड़ हो जाती है और बिना विवेक बुद्धि का प्रयोग कर परम्परा और मोह के कारण श्राद्ध के नाम पर भोजन दान और वस्त्र मृतक के नाम पर देते हैं, जबकि आत्मा को इनकी आवश्यकता कहां? पर सोचे कौन? हमारे पास धान है, इसलिए लुटा रहे हैं और जिन पर धन नहीं है, वे लोग इसलिए परम्परा के नाम पर कुछ भी कर सकते हैं।

हमारे ऋषियों ने कहा कि पितर उन्हें कहते हैं, जो कुछ देते हैं। वैसे तो यह सारा जगत ही पितर कहलाता है, कुछ जड़ पितर हैं, कुछ चैतन्य। सबसे प्रथम पितर हमारी वह माता है, जो विदुषी है तथा अपने गर्भ में और उसके बाद हमें शिक्षा देकर हमारा निर्माण करती है। दूसरा पितर हमारा पिता कहलाता है। आचार्य, राजा, स्वामी भी चैतन्य पितर होते हैं। सूर्य, चन्द्र, जल, अग्नि, पृथ्वी, वायु, अन्तरिक्ष सहित सारा ब्रह्माण्ड हमें कुछ न कुछ देते रहने से पितर कहलाते हैं, जो पिण्ड पितर हैं। जिन कार्यों से यह पितर सुखी हों या तृप्त हों, वह तर्पण कहलाता है।

श्राद्ध और तर्पण, ये दोनों ही कर्म नित्य करने के हैं। श्रद्धापूर्वक माता, पिता, दादा, दादी तथा अन्य वृद्ध एवं सम्मान के पात्र व्यक्तियों का संस्कार एवं उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना श्राद्ध है। भोजन आदि से उन्हें तृप्त करना ही तर्पण कहलाता है। यह कार्य जीवितों में ही हो सकता है, मृतकों में नहीं। उन्हें हर प्रकार से सुखी करना ही अभीष्ठ कार्य है।

ग्रेटर नोएडा, मो. : 9456274350

वैदिक कर्मकाण्ड, प्रवचन तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा आदि के लिए सम्पर्क करें।
सुमन कुमार वैदिक, ग्रेटर नोएडा,
मो. : 9456274350

आवश्यक सूचना : यज्ञ पर शोध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने निश्चय किया है कि यज्ञ की विधि और उसकी वैज्ञानिकता पर अधिक शोध किया जाए। इसके लिए यज्ञ और उसकी वैज्ञानिकता में रुचि रखने वाले अथवा कुछ शोध कर चुके या करने की इच्छा करने वाले आर्यजन अपने नाम, मोबाइल नं0 और ईमेल आईडी भेजने की कृपा करें। जिनके पास पहले से ही विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा किये गये शोध के कुछ परिणाम हों, अथवा प्रकाशित लेख हों, उनकी प्रति भी यथाशीघ्र भिजवाने की कृपा करें। आगामी शोधकार्य आर्यसमाज स्थापना दिवस के दिन से आरम्भ किये जाने का प्रस्ताव है। अत: उपर्युक्त जानकारी शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यालय को भिजवाने की कृपा करें।

-ईश कुमार नारंग, संयोजक, 9911160975
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001,
ईमेल : aryasabha@yahoo.com

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)
द्वारा आयोजित सिविल सर्विसिज IAS परीक्षा-2019 में भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी ध्यान दें

आर्य समाज के शिक्षण संस्थानों/ गुरुकुलों/ सेवाकेन्द्रों/ बालवाड़ियों, डी0ए0वी0 संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं, जो वर्ष 2019 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज एक्जामिनशन में भाग लेना चाहते हैं, अर्थिक एवं मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव के कारणों से परीक्षा तैयारी नहीं कर पा रहे हैं, उन सबके लिए आर्य समाज की ओर से स्वर्णिम अवसर। आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के लिए प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने की घोषणा की जाती है। योजना का लाभ प्राप्त करने के इच्छुक महानुभावों को एक लिखित/ मौखिक एवं बौद्धिक परीक्षा पास करनी होगी। सफल परीक्षार्थियों में से प्रथम 40 अभ्यर्थियों को दिल्ली में आमंत्रित करके भोजन, आवास, एवं तत्संबन्धी समस्त सुविधाएं निशुल्क प्रदान की जाएंगी तथा प्रशिक्षण की तैयारियां कराई जाएंगी। इस योजना का लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी/परीक्षार्थी अपने शैक्षिक प्रमाणपत्रों, वित्तीय स्थिति के विवरण तथा आवश्यक कागजातों की प्रति के साथ अपना आवेदन पत्र संस्थान की Email ID : dss.pratibha@gmail.com पर ईमेल करें। अधिक जानकारी के लिए मोबा. : 9540002856 पर सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक

सत्यार्थप्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त केसरी सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

सत्यार्थप्रकाश के मर्म को समझने-समझाने का दायित्व विद्वानों का है। हमारा प्रयास सत्यार्थप्रकाश के विद्वान तैयार करना है, जो महर्षि दयानन्द के सधर्म रथ को आगे बढ़ा सकें। इसी उद्देश्य से आर्यावर्त केसरी पाक्षिक के सान्निध्य में श्री सुमन कुमार वैदिक के संयोजन में सत्यार्थप्रकाश परीक्षा आयोजित की जा रही है।

परीक्षा में बैठने के लिए आर्यावर्त केसरी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा के पते पर अपना नाम, पता, फोटो, आधारकार्ड की छायाप्रति के साथ 150/- रुपये की धनराशि देनी होगी, जिसमें प्रतिभागी को एक सत्यार्थप्रकाश दिया जाएगा या छ: माह की आर्यावर्त केसरी पाक्षिक की सदस्यता दी जाएगी। यदि आप अपना रजिस्ट्रेशन डाक द्वारा कराएंगे, तो उस स्थिति में आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या-30404724002 (IFSC कोड SBIN 0000610) में 200/- रुपये जमा कराने होंगे तथा रसीद की छायाप्रति भेजनी होगी। पंजीकरण दिनांक 01 अक्टूबर से 30 नवम्बर 2018 तक अमरोहा कार्यालय में अथवा ग्रेटर नोएडा स्थित श्री सुमन कुमार वैदिक के निवास अथवा रोहिणी, दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आर्यावर्त केसरी के स्टॉल पर कराये जा सकते हैं।

प्रथम पुरस्कार- एक लाख रुपये तथा स्मृति चिह्न
द्वितीय पुरस्कार- पचास हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
तृतीय पुरस्कार- पच्चीस हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
नामित पुरस्कार- इसकी संख्या निश्चित नहीं है क्योंकि ये श्रद्धालुओं के परिजनों के नाम से दिये जाएंगे।

कैसे बनेंगे विजेता :
(1) परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, जिनका उत्तर उत्तरपुस्तिका में लिखना होगा।
(2) किसी भी आयुवर्ग का व्यक्ति परीक्षा दे सकता है।
(3) आर्यावर्त केसरी के 25 सदस्य एक स्थान पर बनाने वाले का पंजीकरण नि:शुल्क होगा एवं आर्यावर्त केसरी की ओर से उसको फोटोयुक्त प्रेस परिचय पत्र दिया जाएगा।
(4) पत्र-व्यवहार में सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा लिफाफे पर अवश्य लिखें। परीक्षा का आयोजन दिनांक- 26 मई 2019 को इन प्रस्तावित केन्द्रों- दिल्ली, अमरोहा, ग्रेटर नोएडा, लखनऊ, नजीबाबाद, बरनावा, सासनी, मेरठ, बनारस, बरेली, गुरुग्राम, महेन्द्रगढ़, झज्जर, हिसार, रोहतक, मुम्बई, बेंगलूरु, कलकत्ता, चेन्नई, होशंगाबाद, हैदराबाद, बोकारो, भोपाल, चण्डीगढ़, रोजड़ तथा कोटा आदि में सम्पन्न होगी। परीक्षा केन्द्रों की संख्या बढ़ाने अथवा घटाने तथा परीक्षा तिथि में परिवर्तन करने का अधिकार संयोजक मण्डल को होगा।

विशेष :
1- जो भी परीक्षार्थी विजेता घोषित होगा, उसको पुरस्कार प्राप्त करने से पूर्व मंच पर अपनी योग्यता भी सिद्ध करनी होगी। पुरस्कार-मंच पर उससे जनसामान्य के द्वारा सत्यार्थप्रकाश से संबन्धित प्रश्न पूछे जाएंगे।
2- जो भी धर्मनिष्ठ सज्जन अपनी ओर से कोई नामित पुरस्कार देना चाहेंगे, उनकी इच्छानुसार (स्वयं या किसी प्रियजन के नाम से, जैसा वे चाहें) उनके द्वारा पुरस्कार दिलवाया जाएगा।

सुमन कुमार वैदिक- मुख्य संयोजक
निवास- जे.380, बीटा-।।, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)
मोबा. : 8368508395

डॉ० अनिल रायपुरिया- संयोजक
निवास- कोट बाजार, अमरोहा (उ.प्र.)
मोबा. : 9837442777

सत्यपाल 'सरल'- एक श्रेष्ठ भजनोपदेशक

ससांर का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इस उद्देश्य को पूरा करने में जो भजनोपदेशक प्रसिद्ध हो गये, उनमें एक नाम सत्यपाल 'सरल' का भी है। 'हीरे की कदर जौहरी ही जानता है' लोकोक्ति के अनुसार ब्रजपाल शर्मा 'कर्मठ' ने इस सत्यपाल रूपी हीरे को युवावस्था की दहलीज पर पैर रखने से पूर्व ही पहचान लिया था। पहचान कर तराशा, तराश कर ऐसा हीरा बना दिया, जो आज तक अपना प्रकाश भजनोपदेशों द्वारा चतुर्दिक फैला रहा है।

श्री सत्यपाल 'सरल' के अनुसार उनके भजनों का उद्देश्य लोगों को असत्य से छुड़ाकर सत्य को ग्रहण करना है। उनके गीत वेद को पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने की प्रेरणा देने के लिए हैं। वह ईश्वर के सच्चे स्वरूप को बताकर एकमात्र उसकी ही उपासना करने के लिए प्रेरित करते हैं।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि कस्तूर चन्द 'घनसार' अपने कवित्त में आपकी प्रशंसा करते हुए कहते हैं-

सरल सरस गान, मधुर आवाज
साथ, वाद्यताल सुर-शुद्ध-गायक
सुभाषते; गीत ज्ञान गुण नेक,
विवेक विचार शुद्ध, आय उपदेशक
सों बोलते हुलासते।
आर्य जगत् में यत्र-तत्र भाषण सरल
रस, सुवासित भव्य भाव विभोर
विलासते; आर्यावर्त में प्रचार विशद
कर, आर्य सत्य वैदिक सों रवि सा
प्रकाशते।।

वस्तुत: वह अपने जीवन में अपने उपनाम 'सरल' को सार्थक कर रहे हैं। उनका सरल-सा निवास है, जिसमें एक सरल-सा परिवार स्थित है। उनका सरल-सा लिबास है। भोजन सरल है, सरल भजनोमयी वाणी भी सरल है। तदनुरूप भजनोपदेश कार्यक्रमों में वह दक्षिणा की भी चिन्ता नहीं करते। उनका कहना है कि ''साईं इतना दीजिए, जाए कुटुम्ब समाय। मैं भी भूखा न रहूं, अतिथि न भूखा जाय।।''

आपने वैदिक धर्म के प्रचार के अन्तर्गत उत्तर भारत के समस्त प्रान्तों में, विभिन्न नगरों में तथा ग्रामों में भ्रमण किया है तथा प्रसिद्धि पायी है। आप मॉरीशस भी जा चुके हैं, तथा सन् 1980 से आप समय-समय पर नेपाल के काठमाण्डु, विराट नगर, वीरगंज आदि स्थानों पर जाते रहते हैं।

आपके रचे गीतों की दो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'वैदिक-सरल-गीत' नामक चुने हुए गीतों का संग्रह मधुर प्रकाशन दिल्ली द्वारा, तथा 'सरल-भजनावली' नामक भजनसंग्रह आर्य प्रकाशन दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। आपके गीतों की 5-6 पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रही हैं।

प्रेरक प्रसंग-

आपके पिताजी के देहावसान पर अस्थि-चयन के दिन परिवार के सभी बड़े-छोटों ने कहा कि अस्थि-विसर्जन के लिए हरिद्वार जाना है। वहां से गंगाजल लाकर मंदिर में भगवान को स्नान कराकर तब तेरहवीं का कार्यक्रम, ब्रह्मभोज, रस्म पगड़ी आदि कार्य होंगे। बड़ी विचित्र अवस्था थी। उनको पिताजी के बिछुड़ने का दुख, इधर आघात से बगैर रीढ़ की हड्डी के समान यह क्षुद्र भावना। सब परिजन एक तरफ और ऋषिभक्त 'सरल' दूसरी तरफ। आपने विनम्र भाव से कहा कि ''वह मेरे पिता थे, मुझे उनके लिए या उनके नाम से क्या करना है, मुझे पता है। वैसा करने दीजिए। उनके पिताजी के तीन भाई थे, परन्तु किसी की भी सहमति नहीं मिली। वे वैदिक मान्यतानुसार किये गये आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित भी नहीं हुए। सरल जी को इसका पछतावा नहीं हुआ, वरन् हर्ष ही हुआ कि समाज में स्थापित कुप्रथा के मकड़जाल को तोड़ने का उन्होंने प्रयत्न किया।

आपके भजनोपदेश की यह विशेषता है कि आप श्रोताओं से अपना भावनात्मक संबन्ध जोड़ लेते हैं। जो बात कहते हैं, हृदय से कहते हैं। वही वाणी से प्रकट होकर श्रोताओं के कानों में जाकर उनके हृदय में उतरती है।

सन् 1963 में आपने अपने गांव में आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में कार्य करना आरम्भ कर दिया। आपकी लगन को देखकर उत्तर प्रदेश आर्य वीरदल के संचालक बाल कृष्ण विकल ने मेरठ मण्डल का संचालक नियुक्त किया। उन्होंने आपको बड़ी भूमिका दी। इस जिम्मेदारी के मिलने पर आपने सर्वप्रथम अपने गांव में आर्य वीरदल स्थापित कर एक सशक्त संगठन खड़ा कर दिया। लगभग 50-60 नवयुवक इस संगठन से जुड़ गये। किंतु कभी-कभी दुर्बुद्धि लोग अच्छे काम में भी बुराई देखते हैं। एक व्यक्ति, जो आर्य समाज का सदस्य था, उसने आर्य समाज की आवश्यक बैठक बुलाकर, अन्यों के साथ मिलकर कहा कि ''यह आर्य वीरदल संगठन किसी अनुमति से और क्यों बनाया?इसके लिए क्षमायाचना करें।'' आपने कहा- ''क्षमा याचना क्यों करें श्रीमान?हमने यह महर्षि दयानन्द के युवाओं की सेना बनायी है। कोई अनुचित कार्य नहीं किया है।'' इतना सुनकर उसने कहा- ''तो अनुशासनहीनता के चलते आपको आर्य समाज की सदस्यता से निलम्बित किया जाता है।'' आपने कहा- महोदय आपका धन्यवाद। हमको खुलकर कार्य करने का अवसर मिलेगा। आर्य समाज का कार्य निष्ठा से करेंगे।'' आपने उसी समय आर्य वीरदल के बैनर तले कार्य आरम्भ किया। अर्यावीरदल की शाखा लगाना एवं वार्षिक उत्सव करना, आज तक नियमित रूप से चल रहा है।

जून सन् 2000 ई0 की बात है। जब देश में गुरुकुलों की स्थापना का बीड़ा उठाने वाले स्वामी प्रणवानन्द जी को देहरादून के निकट पौंधा में दान से मिली भूमि पर गुरुकुल स्थापित करना था। उन्होंने सरल जी से अपनी कठिनाई बताई, तथा सहयोग देने व दिलाने को कहा। सरल जी ने बिना किसी ऊहापोह के अपना कर्तव्य सुनिश्चित किया। तत्कालीन भजनोपदेश कार्यक्रमों को स्थगित कर, अंतरात्मा की पुकार पर जी-जान से जुट गये। आर्यजनों ने तथा आर्यसमाजों ने भरपूर दान तथा अनाज आदि दिया। 4 जून सन् 2000 ई0 को गुरुकुल की स्थापना उल्लासपूर्ण वातावरण में हो गयी। स्वामी जी ने आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा सम्मानित किया। हम प्रभु से आर्य जगत के ऐसे विनम्र निरभिमानी, ज्योतिमान भजनोपदेशक के दीर्घजीवी होने की कामना करते हैं।

सरल जी का पता है-

पं. सत्यपाल 'सरल',
आर्य भजनोपदेशक,
246- नई बस्ती,
पार्क रोड, देहरादून-248001
(उत्तराखण्ड)
मो. : 9411394588,
9410124598

(कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत, देहरादून)

नियमित स्तम्भ : आर्यजगत के भजनोपदेशक

आर्यावर्त केसरी के इस स्तम्भ में देश के ऐसे भजनोपदेशकों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर महत्वपूर्ण व प्रेरक सामग्री प्रकाशित की जा रही है, जो वेद के प्रचार-प्रचार, महर्षि दयानन्द सरस्वती व आर्यसमाज के चिन्तन को जन-जन तक पहुंचाने में अपना महती योगदान कर रहे हैं। ऐसे विद्वान भजनोपदेशकों के विषय में बहुमूल्य सामग्री प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं ताकि हम सब उनसे परिचित होकर लाभ उठा सकें। धन्यवाद, -सम्पादक

प्रेरक प्रसंग (क्रमशः)

रामकुमार 'धनुर्धर' वानप्रस्थ द्वारा सम्पादित नीति शतक से..

देशी वेशभूषा के प्रति अनूठा प्रेम

हमारे नीतिशास्त्रों में कई ऐसे प्रसंग हैं, जिनमें सीख दी गई है कि वेशभूषा से कोई महान नहीं बनता, बल्कि विचार ही लोगों को समाज में ऊंचा स्थान दिलाते हैं। जो व्यक्ति नए-नए विचार आत्मसात् करता है, वह स्वत: विद्वानों की संगति का पात्र बन जाता है।

विख्यात संत स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी का नाम उन दिनों मदनमोहन था। वह आगरा के एक कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करने पहुंचे। अंग्रेज शिक्षक ने देखा कि एक युवक खादी की धोती तथा गलबंदी (ब्रजवासियों का विशेष प्रकार का कुर्ता) पहने, माथे पर तिलक लगाए, कक्षा में विराजमान है। शिक्षक उसकी वेशभूषा देखकर भौंचक्का रह गया। उसने संकेत कर, छात्र को पास बुलाकर अंग्रेजी में कोई प्रश्न किया। छात्र ने अंग्रेजी में ही उत्तर दिया। यह देखकर शिक्षक ने कहा- तुम्हें ब्रिटिश वेशभूषा में कक्षा में आना चाहिए।

छात्र ने उत्तर दिया- मैं अपने देश में, अपनी वेशभूषा में कॉलेज क्यों नहीं आ सकता?अंग्रेज शिक्षक चुप हो गया। बाद में उसने मदनमोहन की असाधारण प्रतिभा देखकर भविष्यवाणी की कि यह छात्र आगे चलकर ख्याति प्राप्त करेगा। और आगे चलकर यही मदनमोहन आध्यात्मिक जगत में स्वामी कृष्णबोधाश्रम के नाम से विख्यात हुए। स्वामी जी ने 1942 में गांव-गांव पहुंचकर स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग की प्रेरणा दी।

धर्म का अर्थ सेवा और परोपकार है

नीतिशास्त्रों में कहा गया है- सर्वे भवन्तु सुखिन:। यानी सभी सुखी हों, सभी प्रसन्न हों। जो व्यक्ति सभी के हित की बात कहता है, अथवा सभी को अपना बंधु-सखा मानकर सुख-दुख में उसका साथ देता है, वह संत है। ऐसा व्यक्ति अनायास ही प्रभु के साक्षात्कार का अधिकारी बन जाता है।

महान विरक्त संत उड़िया बाबा से कुछ संत मिलने आये। बातचीत के दौरान किसी ने पूछा- गीता का सार क्या है?एक संत ने कहा- भक्ति। दूसरे ने कहा- ज्ञान। तीसरे साधक ने कहा- कर्म। और अंत में पूज्य उड़िया बाबा ने कहा- आप सब जो कहते हैं, वह भी ठीक है, पर मेरी दृष्टि में गीता का सार है- सर्वभूतहिते रता:। सर्वहित के लिए ही संतों तथा भगवान का आविर्भाव होता है। यह हमारे तमाम धर्मशास्त्र बताते हैं।

पूज्य उड़िया बाबा ने गीता के इस तत्व की ओर व्याख्या करते हुए कहा- धर्म का अर्थ ही सेवा, परोपकार तथा प्राणिमात्र के हित में निहित है। भारतीय संस्कृति में इसलिए न केवल मानव, अपितु वृक्षों, नदियों, पशुओं आदि तक में भगवान के दर्शन कर उनकी पूजा व संरक्षण की प्रेरणा दी गयी है। कुत्तों, चींटियों तक की भूख-प्यास की तृप्ति को धर्म माना गया है। गीता में दुर्जनों के संहार की प्रेरणा के पीछे भी तो सज्जनों के हित का ही भाव है।

सभी संतगण उड़िया बाबा के श्रीमुख से गीता का सारभूत तत्व सुनकर गद्गद हो उठे।

सबसे प्यारे भक्त की पहचान

भगवान ने नारद जी को आदेश दिया कि पृथ्वी लोक जाकर कुछ भक्तों के सत्कार्यों की जानकारी लाओ। मैं उनमें से सबसे प्रिय भक्त का चयन करूंगा। नारद जी अनेक व्यक्तियों से मिले, जो घंटों भगवान की पूजा-उपासना में लगे रहते हैं। उन्होंने अनेक श्रद्धालुओं से भेंट की, जो श्रद्धापूर्वक तीर्थसेवन कर रहे थे।

एक दिन एक गांव से वह गुजर रहे थे कि उन्होंने एक व्यक्ति को वृक्ष को सींचते हुए देखा। सिंचाई के बाद वह व्यक्ति फावड़े से जमीन खोदने लगा। नारद जी ने उससे पूछा- भैया, क्या कभी भगवान का भजन-पूजन भी करते हो?ग्रामीण बोला- महाराज, मैं भजन-पूजन कुछ भी नहीं जानता। मैं सिर्फ यह जानता हूं कि तमाम जीव भगवान की प्यारी संतानें हैं। इसलिए मैं उन्हीं की सेवा में लगा रहता हूं। मैं पोधे रोपता हूं, उन्हें सींचता हूं, जिससे वे राहगीरों को फल तथा छाया देकर सुख प्रदान करें। मैं तालाब खोदता हूं, ताकि वन्य पशु-पक्षी पानी पीकर तृप्त हो सकें। जब किसी रोगी या दुखी को देखता हूं, तो उसकी सेवा करने लगता हूं।

नारद जी ने उसका ब्योरा भी अपने खाते में दर्ज कर लिया। तमाम भक्त जनों के ब्योरे जब भगवान के समक्ष प्रस्तुत किये, तो भगवान ने नारद जी से कहा- देवर्षि, मेरा सबसे प्रिय भक्त तो वह ग्रामीण है, जो हर क्षण सेवा-सहायता जैसे सत्कार्यों में लगा रहता है। पूजा-उपासना की अपेक्षा निरीह पशु-पक्षियों, गरीबों, बीमारों की सेवा-सहायता करने वाला मुझे अधिक प्रिय है

कन्या गुरुकुल
नवलपुर (बिजनौर) उप्र
आवश्यकता है

बिजनौर मीरापुर रोड पर गंगनहर के किनारे शान्त स्थान पर स्थित कन्या गुरुकुल नवलपुर में प्रवेश प्रारम्भ हैं। साथ ही अंग्रेजी पढ़ाने के लिए अध्यापिका की आवश्यकता है। -प्रबन्धक/ प्रधानाचार्य, दूर : 8218138879

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित
'नीति शतक' (दो भागों में)
इसमें है सौ-सौ प्रेरक कथानकों का समावेश

स्वयं पढ़ें और बच्चों को भी पढ़ाएं

अध्यात्म

ईश्वर स्तुति के लाभ

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

ईश्वर में आस्था ना रखने वाले लोग अक्सर यह पूछते हैं कि जब मनुष्य अपने कर्म करने के लिए स्वतंत्र है और वह किसी कार्य को करने, ना करने अथवा किसी अन्य प्रकार से करने के लिए स्वतंत्र हैं तो वह ईश्वर की स्तुति क्यों करे। और फिर ईश्वर को न्यायकारी कहा जाता है तो वह न्यायकारी ईश्वर हमारी प्रशंसा, चाटुकारिता या स्तुति का भूखा नहीं है और ना ही हमारे स्तुति करने से वह अपनी न्याय व्यवस्था भंग करके स्तुति करने वालों को उनके दुष्कर्मों का दंड ना देकर उनकी स्तुति से प्रभावित होकर क्षमादान देते हुए अच्छी नियति पुरस्कार स्वरूप देगा। अब यदि न्यायकारी ईश्वर स्तुति करने पर भी न्याय व्यवस्था को भंग नहीं करेंगे तो प्रश्न उठता है कि ईश्वर स्तुति के क्या लाभ हैं?

क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में जहां स्तुति को परिभाषित किया वहीं साथ ही साथ स्तुति के लाभ भी बतला दिये। ईश्वर की स्तुति करना हम मनुष्यों का प्रथम कर्तव्य अथवा नैतिक दायित्व बन जाता है। सृष्टिकर्ता परमपिता परमेश्वर ने हम सभी मनुष्यों के उपयोग एवं उपभोग के लिए ही इस समस्त प्रकृति और इसके ऐश्वर्यों की रचना की है और हम मनुष्य अपने पूरे जीवन ईश्वर प्रदत्त ऐश्वर्यों का दोहन करते हैं हमें प्राण वायु, सूर्य की रोशनी उष्मा, खाने के लिए विविध प्रकार की वनस्पति, धरती माता के गर्भ से निकले खनिज पदार्थ आदि हर वस्तु परमपिता परमेश्वर द्वारा प्रदत्त ही तो है। इस पर भी यदि हम उस सृष्टिकर्ता पालनकर्ता परमपिता की स्तुति नहीं करते तो निश्चित रूप से हम कृतघ्नता दोष के भागी बनेंगे। वैसे भी लौकिक जीवन में यदि गर्मी के मौसम में प्यास लगने पर कोई एक लोटा शीतल जल पिला दे तो हम उसका धन्यवाद अवश्य करते हैं और वहीं दूसरी ओर ईश्वर जिसने हमें जीवन और जीवन में उपयोग की समस्त सामग्री दी उसकी स्तुति करना हम जरूरी नहीं समझते।

ईश्वर की स्तुति करने से अनेकों प्रत्यक्ष लाभ स्पष्ट दिखाई देते हैं। ईश्वर की स्तुति करते समय हम जिन ईश्वरीय गुणों की चर्चा करते हैं उन गुणों की अपने जीवन में ग्राहयता को बढ़ाते हैं। ईश्वरीय गुणों को गाते समय जब हम कहते हैं कि ईश्वर दयालु है तो दया का भाव हमारे जीवन में भी आए ऐसी अपेक्षा रखते हैं और हम भी अपने साथियों सहयोगियों या अपने उपर आश्रितों पर दया का भाव दिखायें। हमने ईश्वर को न्यायकारी कहा तो अपने जीवन में अपने पद पर बैठ कर हम भी इस गुण का पालन करें अर्थात् किसी भी स्वार्थ की भावना के वशीभूत हम न्याय आचरण को कदापि नहीं त्यागें। ईश्वर स्तुति करते हुए हम भी ईश्वर प्रदत्त वेदज्ञान का स्वाध्याय करते हुए अपने ज्ञान में वृद्धि करने का प्रयास करें। इस प्रकार की ईश्वरीय गुणों की स्तुति सगुण स्तुति कहलाती है। अब यदि हम रोजाना केवल ईश्वरीय गुणों को गा लें लेकिन इन गुणों का समावेश अपने जीवन में ना करें तो हमारी स्थिति उस जड़ टेपरिकार्डर सरीखी हो जायेगी जो केवल बज सकता है। अतः स्तुति करते समय जिन ईश्वरीय गुणों को हम याद करें उनको अपने जीवन में धारण करने का प्रयास पुरूषार्थ भी अवश्य करें। ईश्वरीय गुणों की स्तुति से हमारी ईश्वर के प्रति प्रीति बढ़ती है। ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव को जान मान कर हम गुणगान करते हैं और उन्हें अपने जीवन में धारण करने का पुरूषार्थ करते हैं तो निश्चित रूप से हमारी प्रीति उस परमपिता परमेश्वर से बढ़ती है और हम अपने जीवन को ईश्वरीय पारस के संसर्ग से उन्नत कर सकते हैं। ईश्वरीय गुणों के गुणगान से हमारे अंदर निरअभिमानता आती है अर्थात हमारे झूठे अहंकार का भाव समाप्त हो जाता है क्योंकि हम परमपिता परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ जान मान कर समर्पण भाव से स्तुति गान करते हैं। ईश्वर की स्तुति करने से हमारी आत्मा में आद्रता का भाव उत्पन्न होता है जो गुणों की ग्राहयता को बढ़ाता है। इस प्रकार हमें सदा दैनिक नित्य कर्म के रूप में ईश्वर की स्तुति अवश्य करनी चाहिये।

602, जी.एच.–53, सैक्टर–20,

प्रोफेसर महावीर अग्रवाल- अभिनन्दन ग्रन्थ

मान्यवर,

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि वैदिक वांगमय के उद्भट् विद्वान, संस्कृत साहित्य के पुरोधा, गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के प्रबल परिपोषक, गुरुकुल झज्जर एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के यशस्वी स्नातक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, संकायाध्यक्ष, कुलसचिव एवं कुलपति जैसे पदों को विभूषित करने वाले तथा उत्तराखण्ड संस्कृति अकादमी के संस्थापक सदस्य व उपाध्यक्ष एवं उत्तराराखण्ड संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति जैसे पदों पर आसीन रहने वाले तथा देश-विदेश में आयोजित सैंकड़ों राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय शोध सम्मेलनों में मुख्य अतिथि तथा अध्यक्ष आदि के रूप में शोभा बढ़ाने वाले एवं इंग्लैण्ड, अमेरिका, नेपाल और थाईलैण्ड आदि देशों में भी संस्कृत की पताका फहराने वाले आचार्य डॉ. महावीर जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर उनके जन्मदिवस 09 अक्टूबर 2018 को एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने का निश्चय किया गया है। अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि विभिन्न बिन्दुओं पर अपनी सामग्री अविलम्ब डॉ. विनोद चन्द विद्यालंकार के पते पर पंजीकृत डाक व कोरियर से भेजने का कष्ट करें।

-: निवेदक :-

डॉ. रजत अग्रवाल
प्रबन्धन संकाय,
आई.आई.टी. रुड़की
मोबा. : 9719004491

डॉ. विनोद चन्द्र विद्यालंकार
217, आर्य वानप्रस्थ आश्रम,
ज्वालापुर-249407, हरिद्वार
मोबा. : 9897509561

E-mail : mahavir_gkv@yahoo.co.in
dr.ragat07@gmail.com

हमारी महान विभूतियां

प्रखर राष्ट्रचेता

एनीबेसेन्ट

1.	नाम	एनीबेसेन्ट
2.	जन्म	01 अक्टूबर 1847
3.	जन्म स्थान	लंदन
4.	पिता	विलियम पजेबुड
5.	माता	एमिली मोरिज
6.	पति	रेन. फ्रेन्क बेसेन्ट
7.	शिक्षा	मिस मैरियत से अंग्रेजी, फ्रेन्च, जर्मन
8.	संस्था	1. केन्द्रीय हिन्दू कॉलेज बनारस 2. होमरूल लीग ।।
9.	पत्र	1. कॉमन वील 2. नया भारत
10.	पुस्तकें	1. हाऊ इण्डिया फॉट फोर फ्रीडम 2. आत्महत्या, 3. इण्डिया ए नेशन, 1930 4. इण्डिया एण्ड द अम्पायर 5. इण्डिया वाऊण्ड आर फ्री 6. न्यू इण्डिया
11.	सार्वजनिक जीवन	1. 16 नवम्बर 1893 को भारत में आगमन 2. थियोसोफिकल सोसायटी की अध्यक्ष- 1907 में 3. अगस्त 1917 कलकत्ता अधिवेशन कांग्रेस की प्रथम विदेशी महिला अध्यक्षा।
12.	उल्लेखनीय योगदान	1. भारत राष्ट्रवाद की जागृति में 2. हिन्दू धर्म को श्रेष्ठ बनाने में 3. स्वशासन आन्दोलन में 4. राष्ट्रीय शिक्षा के विस्तार में 5. मदन मोहन मालवीय के साथ बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी की स्थापना
13.	मृत्यु	21 सितम्बर 1933 में।

नियमित स्तम्भ : हमारी महान विभूतियां

आर्यावर्त केसरी द्वारा इस स्तम्भ में राष्ट्र की उन महान विभूतियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर महत्वपूर्ण व प्रेरक सामग्री प्रकाशित की जाती है, जिन्होंने राष्ट्र की प्राचीन संस्कृति, सभ्यता, वैदिक आर्ष चिन्तन, अध्यात्म व राष्ट्रवाद की दिशा में अपना महती योगदान दिया है। इस स्तम्भ का उद्देश्य है कि हमारी पीढ़ियां अपने महापुरुषों के विषय में जान सकें। धन्यवाद,

-सम्पादक

ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त- साहित्य बिक्री केन्द्र

पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि पूज्यपाद ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।
सम्पर्क :- डॉ. अशोक कुमार आर्य
(9412139333)
आर्यावर्त प्रकाशन/आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, अमरोहा-२४४२२१

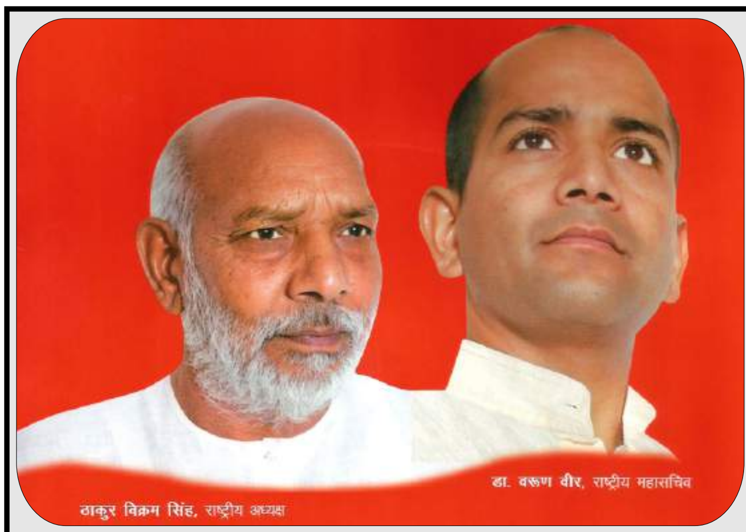

अराजकता, भ्रष्टाचार, शेषण, सरकारी लूट-खसोट, तानाशाही, बलात्कार, मुस्लिम तुष्टिकरण, कॉरपोरेट लूट
अमीर और भी अमीर / गरीब और भी गरीब ● जनता कंगाल नेता मालामाल
क्या इसी के लिए हम स्वतंत्र हुए थे?
हिन्दू हिन्दी हिन्दुस्तान- अब न सहेंगे हम अपमान
आइए, मिलकर इन सबके विरुद्ध एक नई आजादी के लिए संघर्ष करें
राष्ट्रभक्तों का संगठन
राष्ट्र निर्माण पार्टी
भारत निर्वाचन आयोग द्वारा पंजीकृत राजनीतिक दल
ठा० विक्रम सिंह- राष्ट्रीय अध्यक्ष **डॉ० वरुण वीर- राष्ट्रीय महासचिव**
क्षेत्रीय कार्यालय : ए-41, लाजपतनगर II, निकट- मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली- 24, फोन : 011-45791152, 29842527, 9313254938
प्रान्तीय कार्यालय : मोदीपुरम बाईपास, निकट- रेलवे फाटक, मेरठ (उ०प्र०), फोन : 0121-3191555, 9971284450, 9917063562

सोम सोपान

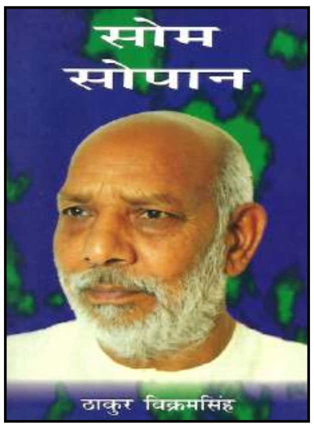

मनु संस्कृति संस्थान, दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा आर्यनेता ठाकुर विक्रमसिंह जी द्वारा लिखित पुस्तक 'सोम सोपान' एक ऐसी पुस्तक है, जिसमें उन्होंने नक्षत्रों के नाम के अर्थों की तुलना मानव के अच्छे संस्कारों से उसके जीवन में होने वाले बदलाव से की है। उनकी यह कृति पठनीय है, जससे नौजवानों को एक संदेश मिलता है। उन्होंने इस पुस्तक में सोम- नम्र बनो, मंगल- हंसते रहो, बुद्ध- बुद्धिमान बनो, वृहस्पति, दानी बनो, शुक्र- तेजस्वी बनो, शनि- धीरे-धीरे चलो, रवि- प्रकाशवान बनो, एवं पाखण्ड-खण्डन जैसे अत्यंत सुन्दर विषयों पर प्रकाश डालकर नौजवानों के जीवन में प्रकाश की एक किरण का संचार किया है। निश्चय ही मैं पाठकों से आशा करती हूं कि इस 'सोम सोपान' को सबके हाथों में पहुंचाकर पुण्य के भागी बनेंगे, तथा युवकों और छात्रवर्ग को इससे अति लाभ पहुंचेगा। सबका जीवन सुन्दर, श्रेष्ठ बने, तो ठाकुर विक्रम सिंह जी द्वारा किया गया परिश्रम सफल होगा। आज सारा संसार ढोंग और पाखण्ड में फंसा हुआ है। इससे ऊपर उठकर पुरुषार्थ करके आर्य जाति को विश्व में सिरमौर बना दो। वास्तव में, अच्छे संस्कार ही अच्छे भविष्य की नींव होते हैं। उनकी यह पुस्तक अत्यंत प्रशंसनीय एवं पठनीय है।

पुस्तक का नाम : सोम सोपान

लेखक : ठाकुर विक्रम सिंह

प्रकाशक व प्राप्ति-स्थान : मनु संस्कृति संस्कृति संस्थान, डी-25, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली- 110024, फोन : 011-41550709

कुल पृष्ठ संख्या : 80, **मूल्य :** 50/- रुपये **समीक्षक : चित्रा गोयल**

वेद में आदर्श स्त्री-शिक्षा

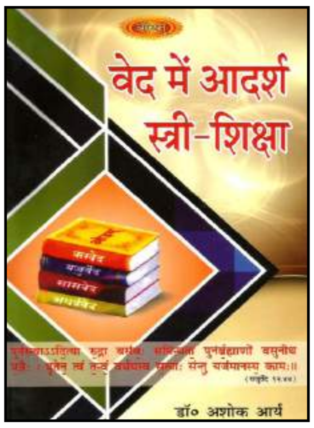

डॉ0 अशोक आर्य जी ने अपनी इस पुस्तक 'वेद में आदर्श स्त्री-शिक्षा' में वेद के ईश्वरीय ज्ञान सुख के लिए वेद का ज्ञान आवश्यक, वेद स्वत: प्रमाण, वेदविरुद्ध चर्चा अप्रामाणिक, स्त्री शिक्षा एक समस्या, वेद सार्वकालिक उपदेश आदि पर विशेष विषयों को उजागर किया है। डॉ0 अशोक आर्य जी ने पुस्तक का सुन्दर कलेवर बनाने में अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने अपनी पुस्तक में गति दे वही शिक्षा, पुष्ट व कर्मशील नारी से प्रगति सम्भव, शिक्षित माता सदा प्रसन्नता देने वाली शिक्षित माता मही समान उदार, संगीत व वेद गायन से स्वस्थ रहें, माहिलाएं पाक तथा निर्माण के कार्य करें। वैद्यक शिक्षा भी नारी के लिए आवश्यक और कुटीर उद्योग से परिवार सुखी हो आदि विषयों पर विशेष प्रकाश डाला है। उनकी यह पुस्तक अत्यधिक पठनीय है।

पुस्तक का नाम : वेद में आदर्श स्त्री-शिक्षा

लेखक : डॉ0 अशोक आर्य

प्रकाशक : आर्य प्रकाशन, 814, कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली

प्राप्ति-स्थान : डॉ0 अशोक आर्य, पॉकेट-1, प्लाट- 61/1, रामप्रस्थ ग्रीन, सेक्टर-7, वैशाली, गाजियाबाद, उ0प्र0 (भारत)- 201010,

चलभाष : 09718528068, दूरभाष : 0120/4127413

E mail : ashokarya1944@rediffmail.com

कुल पृष्ठ संख्या : 104, **मूल्य :** 60/- रुपये

समीक्षक : नेहा अग्रवाल

साहित्य समीक्षा : नियमित स्तम्भ

आर्यावर्त केसरी के इस नियमित स्तम्भ में आर्य जगत के विद्वान लेखकों तथा रचनाकारों की बहुमूल्य कृतियों की समीक्षाएं प्रकाशित की जाती हैं ताकि उनके विषय में जिज्ञासु पाठकों, मननशील शोधार्थियों, मनीषियों तथा विभिन्न धार्मिक सामाजिक, सांस्कृति व शैक्षणिक संस्थाओं को उपयोगी जानकारी मिल सके। इस दृष्टि से इस स्तम्भ में विद्वान, रचनाकारों तथा प्रकाशकों की कृतियों का स्वागत है। एतदर्थ उनसे अनुरोध है कि किसी भी पुस्तक की समीक्षा हेतु उसकी न्यूनतम दो प्रतियां अग्रांकित पते पर भेजने का कष्ट करें। धन्यवाद,

डॉ. बीना रुस्तगी, साहित्य सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221

वैदिक हवन-यज्ञ

ब्रह्मयज्ञ-वैदिक संध्या और उपासना के मंत्रों के सरल अर्थ और कुछ आर्यसमाज की मान्यताएं एकत्रित कर मैंने ''आओ वैदिक संध्या जानें'' के नाम से एक पुस्तक सन् २०१६ में प्रकाशित की, जो अब वेब साइट- www.vedicsandhya.com पर उपलब्ध करा दी है। अब देवयज्ञ-हवन के मंत्रों के शब्दार्थ, भावार्थ लिखकर उनको भी जनमानस तक पहुंचाने के विचार से यह पुस्तक प्रस्तुत है। इसमें ईश्वर-स्तुति, प्रार्थना, उपसना और हवन के मंत्रों के सरल अर्थ और हवन करने की विधि का विवरण है। आशा है, साधारण लोग भी इसको समझकर अपनी दिनचर्या में ला सकेंगे। दैनिक यज्ञ पर्यावरण शुद्ध और पवित्र करने में और शान्ति का वातावरण बनाने में बहुत सहयोग दे सकता है, जो आज की मौलिक आवश्यकता है।

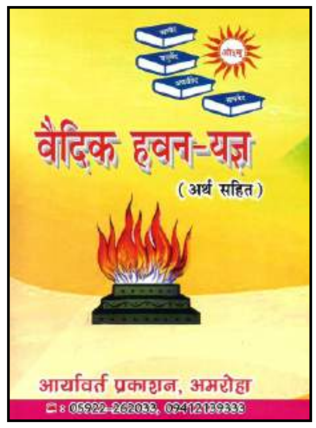

पुस्तक का नाम : वैदिक हवन-यज्ञ

सम्पादक : पी0पी0 अनेजा,

कुल पृष्ठ संख्या : 100, **मूल्य :** निशुल्क

पुस्तक प्राप्ति का पता : P. P. ANEJA, E-1002 ROHAN VASANTHA APTS., OLD AIRPORT- VARTHUR ROAD, MARATHAHALLI; BENGALURU-560037, Mob.: 09900120441

समीक्षक : डॉ. बीना रुस्तगी

क्रान्ति

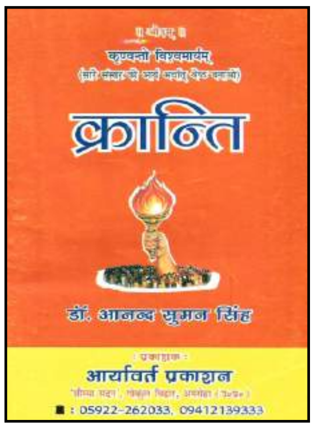

यह पुस्तक आर्य जगत के प्रखर व्यक्तित्व, हिन्दी भाषा के उपासक, वैदिक साहित्य के प्रसारक, मूर्धन्य विद्वान तथा 'सरस्वती सुमन' हिन्दी मासिक के यशस्वी प्रधान संपादक, नवाब छतारी डॉ0 आनन्दसुमन सिंह वैदिक प्रवक्ता द्वारा लिखित है। अपनी रचनाशीलता तथा व्याख्यानों के माध्यम से लेखक निरंतर आर्य समाज के उन्नयन, वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार, तथा प्राच्य सभ्यता व संस्कृति के साथ ही ऋषिवर दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। उसी की एक कड़ी के रूप में उक्त पुस्तक 'क्रान्ति' भी प्रस्तुत है।

पुस्तक का नाम : क्रान्ति

लेखक : डॉ0 आनन्द सुमन सिंह

प्रकाशक : सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0प्र0)- 244221

फोन : 05922-262033, 0942139333

प्राप्ति-स्थान : आर्यावर्त प्रकाशन, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ0प्र0) दूरभाष : 05922-262033, प्रेमप्रकाश रस्तौगी, काला कुआं, अमरोहा (उ0प्र0), डॉ0 आनन्दसुमन सिंह, सारस्वतम्, 1- छिब्बर मार्ग, आर्यनगर, देहरादून- 248001 फोन : 01352740060

पृष्ठ : 56, **मूल्य :** 20/- रुपये **समीक्षक : डॉ. ब्रजेश चौहान**

'वयस्वी' स्मारिका

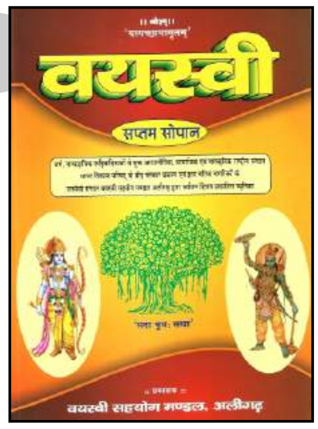

नैतिक, सर्वहितकारी एवं स्वयंसेवा अन्तर्राष्ट्रीय संस्था भारत विकास परिषद से संप्रेरित 'वयस्वी' सहयोग मण्डल, अलीगढ़ की ओर से 'वयस्वी' स्मारिका का प्रकाशन किया गया। देवनारायण भारद्वाज के प्रधान सम्पादन तथा आर्य रामचन्द्र राठौर, दिनेश शर्मा एवं लटूरी सिंह के निर्देशन में प्रकाशित इस स्मारिका में अनेक सारगर्भित, मूल्यपरक तथा पठनीय आलेख तथा रचनाएं हैं। इसमें ईश्वर, शाकाहार, व्यक्ति का उत्थान एवं पतन, आलस्य त्याग, वैदिक इतिहास के साथ, छल-प्रपंच, राष्ट्र उद्धाकर, दयानन्द आदि जैसे महत्वपूर्ण लेख हैं। स्मारिका, विषय सामग्री, कलेवर व प्रस्तुतिकरण आदि सभी दृष्टियों से पठनीय व संग्रहणीय है।

स्मारिका का नाम : वयस्वी, **प्रकाशक :** वयस्वी सहयोग मण्डल, अलीगढ़

पता : देवनारायण भारद्वाज, प्रधान सम्पादक, एम0आई0जी- 37, अवन्तिका फेस-2, ए0डी0ए0 कालोनी, रामघाट रोड, अलीगढ़ (उ0प्र0)- 202001, फोन : 9917777711 **समीक्षक : डॉ० बीना रुस्तगी**

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली : 25-28 अक्टूबर, 2018

आने वाले महानुभाव अपने आने की व्यक्तिगत सूचना तुरन्त भेजें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन- 2018 दिल्ली, में भाग लेने वाले महानुभाव के लिए भोजन तथा आवास की व्यवस्था की गयी है। अत: अपने आगमन की पूर्व सूचना अग्रिम भेजने की कृपा करें, जिससे आपके ठहरने व भोजन की सुन्दर व्यवस्था की जा सके। आप अपना नाम, पता, मोबाइल नं0, ईमेल पता निम्न प्रकार के प्रारूप में, **'संयोजक, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-२०१८, १५ हनुमान रोड, दिल्ली- ११०००१** के पते पर भेज देवें।

1. नाम : ....

2. पूरा पता (स्पष्ट अक्षरों में) : ....

राज्य ....पिन कोड : ....

3. मोबाइल नं0 : ....

4. ईमेल (यदि हो तो) : ....

5. संबन्धित आर्य समाज का नाम : ....

6. आगमन की तिथि : .... प्रस्थान की तिथि : ....

7. आने का साधन- रेल/ बस/ निजी वाहन : ....

(यदि निजी वाहन है, तो वाहन का नाम व वाहन सं0)

8. आगमन स्टेशन का नाम : ....

दिनांक : हस्ताक्षर

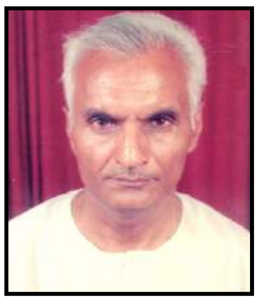

ऋग्वेद दोहावली

कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत

प्रथम मण्डल, चतुर्थ सूक्त, मंत्र-८ से १० तक

सतकर्मी हे प्रभु सदा, सोम रक्षते आप।
कामादि शत्रु मिटा, उनको देते ताप।।
देते वासना युद्धों में, पापी जन को शाप।
खाते सात्विक अन्न जो, उन्हें रक्षते आप।।८।।
करें अर्चना हम सदा, शतकर्मी प्रभु तोर।
साथ आपका प्राप्त कर, देते शत्रु मरोर।।
कामादिक अरि दल से लख, कर आध्यात्मिक युद्ध।
हमें बनाते आप प्रभु, शक्तिमान प्रबुद्ध।।
परमैश्वर्यशाली प्रभो! इस अरि-दल को मरोर।
धन प्राप्ति हित हम करें, सदा अर्चना तोर।।६।।
परमैश्वर्यशाली प्रभु, के तुम गाओ गीत।
सभी धनों का स्वामी वह, करो उसे से प्रीत।
वह महान् है सबको ही, धन देता अविराम।
करे सुगमता से सफल, सबके ही सब काम।।
सोम रक्ष निज तन में जो, निर्मल करे चरित्र।
ऐसे पावन यज्ञमय, नर का है वह मित्र।।१०।।

प्रथम मण्डल, पंचम सूक्त, मंत्र-१ से २ तक

अहे मित्रगण स्तवन, कर्ता प्रभु के आप।
आकर यहां विराजिए, करने को प्रभु जाप।।
बैठ नम्रता पूर्वक, निज निज आसन बीच।
गीत प्रभु के गाइए, तज कुवासना नीच।।१।।
सर्वाधिक पालक है जो, पालन हारों बीच।
हम सब नित गाते उसे, प्रेम-वारि से सींच।।
बहुवरणीय धनों का, वह स्वामी कहलाय।
वह संकीर्तन कर्ता का, शत्रु-दल दहलाय।।
परमैश्वर्यशाली प्रभु, की स्तुति तत् गात।
करे सुरक्षित सोम को, बुद्धि सूक्ष्म हो जात।।
सूक्ष्म बुद्धि ही भक्त का, प्रभु से मेल कराय।
वह दर्शन प्रभु का करा, शुभता मार्ग चलाय।।२।।

-देहरादून,
मोबा० : ६४१२६३५६६३

मनीषी-वेदना

डॉ० सारस्वत मोहन मनीषी

मारे जाओ मारे जाओ तीन अंधेरे में।
कुछ न मिलेगा बहुत देर है अभी सवेरे में।।
भीख मांगने देने में होता अन्तर भारी,
बने भिखारी लगे हुए हम तेरे-मेरे में।
हम पट्टाभि रमैया सीता को दुहराते हैं।
फूल-फूल गर्वोन्नत हो तालियां बजाते हैं।
पिच्यासी प्रतिशत हम थे संसद में कितने हैं?
करो आत्म चिन्तन आर्यो वेदना सुनाते हैं।
कृण्वन्तो विश्व मार्यम् का घोष गुंजाते हैं।
भारत तक न रहा अपना यह व्यथा सुनाते हैं।
जलसों में तालियां बजाओ अपने घर जाओ,
वाक् शूर देखे हमने झुनझुना बजाते हैं।
सेवा को अब नाम दे दिया व्यापारों का।
बैठ किनारे गीत गा रहे हैं मझधारों का।
लड़ना है तो लड़ो दुश्मनों से आपस में क्यों?
सिंहासन सिंहों का होता, नहीं सियारों का।
आत्ममुग्ध हो कर सच से अनजान बने बैठे।
त्याग-तपस्या के मद में भगवान बने बैठे।
उठो आर्यो जामवन्त बन तुम्हें जगाता हूं,
अपनी शक्ति भूलकर क्यों हनुमान बने बैठे?
पाखंडों की लंका में कब आग लगाओगे?
बढ़े अंधविश्वास उठो कब धूल चटाओगे?
कुंभकर्ण बन सोए कब से राम जगाता हूं,
हुआ खत्म बनवास लौटकर कब घर आओगे?
मथुरा अभी कंस-कब्जे में यमुना भी मावस की है।
केसर-घाटी में कैक्टस हैं धारा अभी हवस की है।
मंदिर तक तो बना न सकते राम खड़े हैं तम्बू में,
काशी विश्वनाथ किसका है कहो अयोध्या किसकी है?

मोबा. : 9810835335

वीरो अब तो सन्धान करो

डॉ0 रामबहादुर 'व्यथित'

हे धर्मराज हे शान्तिदूत! विष ऊपर चढ़ता जाता है,
शान्ति-कपोतों का सपना, अब खण्डित होता जाता है।
कब तक बर्दाश्त करोगे, अब ललनाएं करत चीत्कार,
जो शीश गर्व से उन्नत था, वह नीचे झुकता जाता है।।
कायरता का आसव पीकर, कब तक मृदु राग अलापोगे?
लपटें छूतीं हैं आसमान, तुम चरण-धूलि ही फांकोगे?
गाण्डीव हुआ क्या चूर-चूर,क्या गदा भीम की रेहन है?
दुश्मन है छाती रोंद रहा, तुम वातायन से झांकोगे?
तुम चन्द्रगुप्त के वंशज हो, तलवार क्या गिरवीं रख आये?
समुद्रगुप्त का तेज प्रखर, क्या गुरुकुल में ही धर आये?
विक्रमादित्य का वंशज हूं,- कहलाना यारो बन्द करो,
राणा सांगा का स्वाभिमान, क्या संसद में ही रख आये?
क्षात्र धर्म के प्रहरी तुम, वीरों, अब तो सन्धान करो,
हे तेज-पुंज! अरि-सहांरक! सीता के कष्ट निदान करो।
इतिहास न तुमको धिक्कारे, चुप्पी तोड़ो, हुंकार भरो,
दासत्व न फिर से आ जाये, घी-घी छोड़ो प्रस्थान करो।।

-विजय वाटिका, कोठी नं०-३,
सिविल लाइन, बदायूं (उ०प्र०)

उनको नहीं कभी भूलना

अतरसिंह आर्य

लावनी- कष्ट उठाकर देश धर्म पर लाखों ने बलिदान किया।
याद करो उनको जिनको, अपनों ने यहां विषपान दिया।। टेक-
आर्यावर्त यह देश हमारा, अब इसको तुम्हें बचाना।।1।।
देशधर्म के लिए शिवाजी ने तलवार उठाई थी।
महाराणा प्रताप झुके ना घास की रोटी खाई थी।।
बाल हकीकत मरा धर्म पर मर कर भी वह मरा ना।।2।।
राजगुरु सुखदेव भगतसिंह, उदयसिंह था क्या कम था।
भारे फिरे सुभाष जगत में देश बचाने का गम था।।
सावरकर बन्दा बैरागी, चाहूं सबकी याद दिलाना।।3।।
पन्ना ने इस देश की खातिर, बेटे का बलिदान दिया।
पद्मावत लक्ष्मीबाई ने युद्ध यहां घमासान किया।।
लाखों ने किये प्राण निछावर करे उनको याद जमाना।। 4।।
राष्ट्रोदय करने को वीरो, करना है संघर्ष बड़ा।
जात पात और ऊंच नीच से ना होता संगठन खड़ा।।
तो दर्द देश का अतर आर्य, लिखकर चाहे समझाना।।5।।

-दक्षनगर, बिजनौर, मोबा. : 8923392277

जीवन-मृत्यु

आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य'

धूप की एक किरण
रोशनदान से होकर
मेरे कमरे की दीवार पर
आ बैठी।
त्रिभुज सी
लाइब्रेरी की पुस्तकों पर तैरती हुई
एक बड़ी आयत बनकर
फर्श पर उतर आई।
आहिस्ता-आहिस्ता
सरकती हुई
दरवाजे की दहलीज
तक पहुंचते-पहुंचते
बिन्दू बनकर, डूबती-उतराती
लुप्त हो गयी।

-महादेव, सुन्दरनगर,
जिला- मण्डी (हि०प्र०)

अवश्य पढ़ें
आज ही मंगाएं
आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित विभिन्न संग्रहणीय व उत्कृष्ट पुस्तकें।
कम से कम सौ पुस्तकें मंगाने पर विशेष छूट है।

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा द्वारा प्रमाणित १४ आर्यपर्वों से संबंधित एक विशेष पुस्तक
आर्य पर्व पद्धति
मूल्य : २० रुपये

महर्षि दयानन्द की विशेषताएं
मूल्य : ८ रुपये

आर्योद्देश्य- रत्नमाला
मूल्य : ८ रुपये

ओ३म्
HANDICRAFT
सुषमा कला केन्द्र

आकर्षक स्मृति चिन्ह तथा पारितोषिक सामग्री के लिए सम्पर्क करें।

प्रो० सुषमा गोगलानी
मोबा. : 9582436134

प्रतिनिधि-
अशोक कुमार गोगलानी
मोबा. : 8587883198

सी-1/1904 G.H.-05, B-Tech Zone-4, चैरी काउण्टी, ग्रेटर नोएडा (वैस्ट)

सृष्टि की आयु एवं मानव उत्पत्ति का इतिहास

भगवान दास आर्य

सृष्टि की आयु : सृष्टि की आयु 4 अरब 32 करोड़ वर्ष की होती है। इसे ब्रह्मा का 'दिन' कहते हैं। इतने ही समय की महाप्रलय होती है। कुल मिलाकर आठ अरब 64 करोड़ वर्ष का ब्रह्मा का एक अहोरात्र माना जाता है। ब्रह्मा शब्द संज्ञा है अर्थात् एक पैमाना है।

मानव उत्पत्ति : वर्तमान सृष्टि की उत्पत्ति इस्वी सन् 2018 से एक अरब छियानवें करोड़ आठ लाख तरेपन हजार 118 वर्ष पूर्व तिथि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा दिन रविवार अश्विनी नक्षत्र में ब्रह्म मुहूर्त में मां पृथ्वी के गर्भ से अयौनिन जवान सहस्रों स्त्री-पुरुषों के रूप में उत्पत्ति हुई थी।

टिप्पणी : कारण यह है कि यदि ईश्वर बच्चे पैदा करता तो उन्हें कौन पालता? और वृद्ध आयु के पैदा करता, तो वे सृष्टि नहीं चला सकते थे। अत: जवान ही पैदा हुए। प्रश्न यह भी है कि इसका प्रमाण क्या है? बुद्धिगम्य बात यह है कि पहले किसी चीज के निर्माण से पूर्व ब्लॉक अर्थात् फरमा बनाया जाता है। उसी फरमे से आगे की प्रक्रिया चालू हो जाती है। अर्थात् फिर यौनिन सृष्टि शुरु होती है।

नोट : पृथ्वी पर जो आत्माएं प्रारम्भ में जन्म लेती हैं, वे मोक्ष भोगकर पुन: इस संसार में आती हैं। मोक्ष की अवधि 36 हजार बार पृथ्वी पैदा एवं नष्ट होना है। ये ब्रह्मा के 100 वर्ष की पूर्ण आयु होती है। 360 बार पृथ्वी पैदा एवं नष्ट होना ब्रह्मा का एक वर्ष है। अत: 36000 बार पृथ्वी पैदा एवं नष्ट होना ब्रह्मा के 100 वर्ष की आयु होती है। ब्रह्मा के 100 वर्ष की आयु को परान्तकाल भी कहते हैं। मनुष्यों की उत्पत्ति से 6 चतुर्युगी पूर्व सृष्टि की उत्पत्ति हुई थी। अर्थात् 1 अरब 97 करोड़ 29 लाख उनन्चास हजार एक सौ अठारह वर्ष पूर्व हुई थी। अर्थात् ईस्वी सन् दो हजार अठारह में उपरोक्त पूर्व तिथि को हुई थी।

बेलौन, बुलन्दशहर (उ०प्र०)

न जायते म्रियते वा कदाचिन, नायं भूत्वा भविता वा न भुयावा:। अजो नित्य: शाश्वतोयम पुरानो, न हन्यते हन्यमाने शरीरे। (भगवद् गीता)

आत्मा न कभी जन्म लेती है और न मरती है, न उसका शरीर के साथ जन्म होता है, और न ही शरीर के मरने पर वो मरती है। आत्मा अमर है, अमिट है और समय से परे है।

हार्दिक श्रद्धांजलि

आर्यत्व के प्रतीक,
सहजता व सरलता
की प्रतिमूर्ति,
कर्मनिष्ठ साधक,
तपोनिष्ठ वानप्रस्थ,
स्वाध्यायशील,
वैदिक चिन्तक,
समाजसेवी एवं
कर्मठ व्यक्तित्व

ओ३म् प्रकाश जी आर्य

(12 सितम्बर 1916 : 21 जनवरी 2010)

शत्-शत् नमन

लोग कहते हैं कि ज़माना बदलता है अक्सर,
मर्द वो हैं जो ज़माने को बदल देते हैं।

**आर्यत्व के प्रतीक जिन्होंने जीवन को त्यागमय बना लिया
गृहस्थ में रहते हुए भी सच्चे वानप्रस्थी
व सन्यासी की भांति जीवन जिया**

देवेन्द्र कुमार आर्य एवं आर्यावर्त केसरी परिवार

हार्दिक श्रद्धांजलि

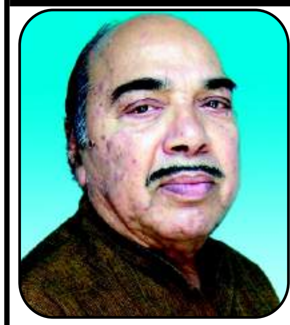

मौत ने धीरे से न जाने क्या कहा,
जिन्दगी खामोश होकर रह गयी।

प्रमुख समाजसेवी, प्रसिद्ध
उद्योगपति, साहित्यसेवी,
जे.एस. हिन्दू कॉलेज
के पूर्व अध्यक्ष व मंत्री,
कर्मठ तथा एक समर्पित व्यक्तित्व

श्री सुमत कुमार जैन

(31 जुलाई 1939 : उदय ● अवसान : 10 सितम्बर 2018)

शत्-शत् नमन

जाने कितने ही गये इस राह से उनका पता,
पर गये कुछ छोड़ इस पर अपने पैरों की निशानी;
वो निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है...

सौरभ जैन, योगेश जैन एवं समस्त जैन परिवार

मै० किसान फिलिंग स्टेशन, मंगलम फ्लैम्स, जैन क्लॉथ हाउस, अमरोहा ग्रीन्स, सिटी होम्स, जैन गारमेन्ट्स, फर्स्ट च्वाइस सर्विस सेन्टर, अमरोहा

शत्-शत् नमन

रमेश चन्द्र पंत

(31.08.1936 ● 01.03.2018)

स्मृति को अनगिन प्रणाम

उनकी यादों, सपनों, आदर्शों को हम सदा अपने अन्त: हृदय में संजोय हैं, उनका दृढ़ता संकल्प, विचार और सदाशयता लगातार हमारा पथ प्रदर्शन करती रही है और करती रहेगी।

समस्त पंत एवं आर्यावर्त केसरी परिवार

**यह नीड़ मनोहर कृतियों का,
यह विश्व कर्म रंग-स्थल है।**

(कामायनी)

श्री कौस्तुभानन्द पन्त

(13.09.1963 ● 18.05.2016)

एक अद्वितीय व्यक्तित्व जिसने अल्प समय में ही एक इतिहास रच दिया, जो आज भी हमारे प्रेरणास्रोत एवं संबल है तथा हमेशा रहेंगे।

शतश: नमन्

समस्त पंत परिवार एवं आर्यावर्त केसरी समूह

आत्मा अमर है और स्मृतियां अमिट..

आओ हम अपने प्रियजनों को शतश: नमन करें,
जो आज हमारे मध्य नहीं हैं।
केवल शेष बची है उनकी मधुरम स्मृतियां
जो आज भी उनकी जीवन्तता, सक्रियता, समर्पण व त्याग-तपस्या की याद दिलाकर
प्रशस्त कर करती है हमारा सशक्त पथ
आर्यावर्त केसरी
के माध्यम से उन्हें करें कोटिश: नमन
और उनकी पुण्य स्मृति में प्रदान करें
आर्यावर्त केसरी के प्रचार-प्रसार यज्ञ में **501/-** की एक पावन आहुति।

-सम्पादक (मोबा. : 9412139333)

१८वीं जयंती पर शत्-शत् नमन

स्वतंत्रता सैनानी डॉ. बाल गोविन्द गुप्त

(22.09.1920 ● 28.07.2009)

हम सब उनके द्वारा आचरित श्रेष्ठ मार्ग पर अग्रसर होने का सत्संकल्प लेते हुए उनके चरण कमलों में श्रद्धासुमन समर्पित करते हुए श्रद्धावनत हैं।

*वीरेन्द्र कुमार बंसल- ममता बंसल
नरेन्द्र कुमार बंसल- सरोज बंसल
कृष्ण कुमार बंसल- सुषमा बंसल
राज कुमार बंसल- कीर्ति बंसल
यशोदा बंसल- वीरेन्द्र कुमार गुप्ता*
काला कुआं, अमरोहा-244221

25 से 28 अक्टूबर 2018 तक होगा देश की राजधानी दिल्ली में

ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

नई दिल्ली। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली 2018 के आयोजन की तैयारियां अब चरम पर हैं। विश्व भर से आर्यजन इस महासम्मेलन में भारी संख्या में पहुंच रहे हैं। हॉलैण्ड, नीदरलैण्ड, बैल्जियम, अमेरिका, इंग्लैण्ड, नेपाल, भूटान, बर्मा, मलेशिया, त्रिनिडाड, मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका आदि सहित विश्व के अनेक देशों में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली द्वारा सम्पर्क साधा गया है। सार्वदेशिक सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन- 2018 दिल्ली' का भव्य आयोजन दिल्ली के स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी में दिनांक 25-26-27 एवं 28 अक्टूबर, 2018 तक किया जा रहा है।

देश सहित सारे आर्यजगत में इसकी तैयारियां जोरों पर हैं। वर्ष 2012 के दिल्ली महासम्मेलन के उपरान्त दक्षिणी अफ्रीका, सिंगापुर-थाईलैंड, आस्ट्रेलिया, नेपाल एवं बर्मा में सफल आयोजनों के पश्चात् दिल्ली में पुनः इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। आयोजन समिति ने आर्यजनों से अपील की है कि अपनी-अपनी आर्यसमाज के समस्त अधिकारियों, सदस्यों के परिवार एवं विशेषकर युवाओं सहित अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने के लिए आर्यजनों को प्रेरित करें।

लोगो, होर्डिंग्स, पोस्टर, पेम्फलेट आदि प्रचार सामग्री प्रान्तीय सम्मेलन कार्यालय अथवा केन्द्रीय सम्मेलन कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है तथा www.aryamahasammelan.org तथा www.thearyasamaj.org से डाउनलोड भी की जा सकती है।

वयोवृद्धों का होगा सम्मान

आर्य महासम्मेलन में 80 वर्ष से अधिक आयु के ऐसे महानुभावों का जिन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को समर्पित किया हो, अथवा विशेष योगदान दिया हो, का विशेष सम्मान किये जाने की योजना है। ऐसे आर्यजनों का पूर्ण विवरण लिखकर केन्द्रीय आयोजन समिति को भेजें, जिससे उनके नामों पर समिति विचार कर सके। महासम्मेलन में युवा कार्यकर्ता/ महिला कार्यकर्ता, जिन्होंने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अत्यंत उल्लेखनीय कार्य किया हो, को भी सम्मानित किया जाएगा।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25 से 28 अक्टूबर 2018
दिल्ली
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महासम्मेलन स्मारिका का भव्य प्रकाशन

सभी आर्य समाजें व आर्य संस्थाएं विज्ञापन अवश्य भेजें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका हेतु वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों से निवेदन है कि वे आर्य समाज के अनछुए विषयों, समसामयिक विषयों एवं आर्य जगत की महान विभूतियों आदि से संबन्धित महत्वपूर्ण लेख भेजें। अपना विज्ञापन, अपनी संस्था/ आर्य समाज/ अपने परिवार के संबन्ध में सामग्री का प्रकाशन अथवा अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि और कार्य का परिचय भी दे सकते हैं।

स्मारिका 15 अक्टूबर तक तैयार हो जायेगी और 23 x 36 x 8 साइज में प्रकाशित होगी।

विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

पूरा पृष्ठ- (श्वेत श्याम) 10,000/-, पूरा पृष्ठ- (रंगीन) 21,000/-,
आधा पृष्ठ- (श्वेत श्याम) 7,500/-, आधा पृष्ठ- (रंगीन) 12,500/-,
चौथाई पृष्ठ- (श्वेत श्याम) 5,000/-, चौथाई पृष्ठ- (रंगीन) 7,500/-,

संपर्क : अजय सहगल, संपादक/संयोजक स्मारिका, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, ईमेल : aryasabha@yahoo.com

वैदिक कर्मकाण्ड, प्रवचन, आयुर्वेद सम्बन्धी व्याख्यान के लिए सम्पर्क करें

सुमन कुमार वैदिक
निवास- जे.-380, बीटा-II,
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)
मोबा. : 8368508395

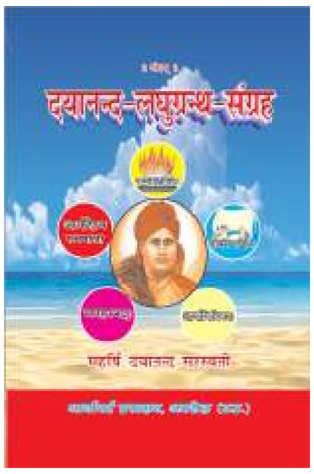

अवश्य पढ़ें - आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित संग्रहणीय पुस्तक

दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह

इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत इन पांच पुस्तकों का संग्रह है-

- पंचमहायज्ञविधि
- आर्योद्देश्यरत्नमाला
- गोकरुणानिधि
- व्यवहारभानु
- आर्याभिविनयः

पृष्ठ : 212, मूल्य : 60/- रुपये

पुस्तकें वी०पी०पी०, रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांस्पोर्ट से भेजी जा सकती हैं। अधिक मंगाने पर विशेष छूट उपलब्ध है।

पता- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) सम्पर्क सूत्र : 09412139333

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित 'आर्यावर्त केसरी' के बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC कोड : SBIN0000610) में जमा करा सकते हैं, अथवा चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर.-05922-262033, चल.- 09412139333

आर्य समाज, आर्य श्रीमाली सोनी परिवार, प्रगति मण्डल, राजकोट (गुजरात)

सदस्य बनें

गुजरात राज्य तथा गुजरात के बाहर तमाम गुजराती श्रीमाली व सोनी परिवार सदस्य बनने के लिए सादर आमंत्रित हैं। कृपया आगे लिखे पते पर पत्र-व्यवहार या संपर्क करें। सदस्यता निःशुल्क है।

पता : आर्य भाईलाल शिवलाल सोनी, म०नं०- 101, केशव एपार्टमेंट नं०-1, ठाकुरद्वार पार्क नं०-1, नया मोरबी रोड, मधुबन स्कूल के पास, पोस्ट- बेडीपुरा, राजकोट (गुजरात)-360003, मोबा. : 09712370185

महापुरुषों की जन्मतिथियों तथा पुण्यतिथियों पर बड़ी संख्या में 'प्रखर राष्ट्रचेता' शीर्षक से प्रकाशित उनकी जीवनियां वितरित की जानी चाहिए, ताकि उनके योगदान को समझा जा सके। -सम्पादक

महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार प्रकल्प के अन्तर्गत देश-विदेश में वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु

प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से देश-विदेश में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की शृंखला आरम्भ की जा रही है, जिसके लिए सुयोग्य उम्मीदवारों के आवेदन आमंत्रित हैं। कुल पद : **भारत हेतु २०, तथा विदेशों हेतु ५ हैं। इच्छुक अभ्यर्थी के लिए वांछित योग्यताएं ये हैं**- 1. आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त हो। 2. गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो। 3. यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में निपुण हो। 4. आर्य समाज के प्रचार की हार्दिक इच्छा रखता हो। 5. युवा हों, जिसकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो।

चयनित अभ्यर्थी की प्रथम नियुक्ति भारत के किसी भी राज्य में तथा विशिष्ट अंग्रेजी भाषा ज्ञान और कार्य के अनुभव के उपरांत भारत से बाहर किसी भी देश में की जाएगी। पूर्ण योग्यता होने की दृष्टि में सीधे विदेशों में नियुक्ति की जा सकती है। सम्मानित मानदेय के साथ-साथ वाहन व्यय, मोबाइल व्यय, स्वास्थ्य बीमा, आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य साधने की दृढ़ इच्छा रखने वाले युवा महानुभाव अपना विस्तृत आवेदन पत्र- विश्व में आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता और उनकी महान इच्छा, पारिवारिक स्थिति एवं परिचय, भाषाज्ञान, कम्प्यूटर ज्ञान, शैक्षिक योग्यता, पासपोर्ट नं०, मोबाइल एवं ईमेल के साथ तत्काल रूप से **'संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति'** के नाम- **'१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१'** के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें।

-संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव ६ से

उदयपुर। राजस्थान प्रान्त की अत्यन्त मनोरम नगरी उदयपुर जहां नवलखा महल में बैठकर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की, में 6 से 8 अक्टूबर 2018 तक 21वें सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का भव्य आयोजन किया जायेगा।

ज्ञातव्य है कि 1992 में यह महल आर्यसमाज को हस्तगत किया गया था। निरन्तर पुरुषार्थ व जनता के सहयोग व स्नेह से अब यह एक सुन्दर स्मारक बन गया है जहां प्रतिवर्ष 30 हजार से भी अधिक पर्यटक आते हैं। सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के सम्बन्ध में मोबा. : 7229948860 तथा 9314235101 पर भी विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

आर्यावर्त केसरी के सदस्यों से विनम्र अनुरोध

आर्यावर्त केसरी के सभी सम्मानित सदस्यों से अनुरोध है कि उनकी वार्षिक सदस्यता अवधि नाम व पते की स्लिप पर अंकित रहती है। अतः स्लिप पर अंकित अवधि के अनुसार यथासमय अपना वार्षिक सदस्यता सहयोग भेजते रहा करें। जिन मान्य सदस्यों ने अभी तक अपनी वार्षिक सदस्यता–राशि जमा नहीं की है, वे कृपया मनीआर्डर द्वारा आर्यावर्त केसरी के पते पर भेजकर रसीद प्राप्त कर लें, ताकि उन्हें आर्यावर्त केसरी निरंतर मिलता रहे।

प्रबन्धक (प्रसार)– आर्यावर्त केसरी

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त केसरी
संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', (मोबा : 9456274350)
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार,
डॉ. ब्रजेश चौहान, अमित कुमार
मुद्रण- इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

बहजोई में उत्सव ११ से

बहजोई (सम्भल) उ.प्र.। आर्य समाज का 106वां वार्षिकोत्सव 19 से 21 सितम्बर 2018 तक धूमधाम से होगा। (लव कुमार आर्य मंत्री, मोबा. : 9412449471)

दढ़ियाल का उत्सव २ से

दढ़ियाल (हसनपुर) अमरोहा, उ.प्र.। आर्य समाज का वार्षिकोत्सव 2 से 4 नवम्बर 2018 तक होगा। (ज्ञानेन्द्र आर्य, प्रधान, मोबा. : 9412493724)

महासम्मेलन ११ को

बरनाला (पंजाब)। आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के तत्वावधान में 11 नवम्बर 2018 को आर्य महासम्मेलन होगा।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के महत्वपूर्ण सम्पर्क सूत्र

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष- स्वागत समिति।
सुरेश चन्द्र आर्य
प्रधान- सार्वदेशिक सभा (09824072509)
प्रकाश आर्य :
मंत्री- सार्वदेशिक सभा (09826655117)
धर्मपाल आर्य :
महासम्मेलन संयोजक (09810061763)
विनय आर्य, महामंत्री- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (9958174441)

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा स्थापित

सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि के सहयोगी महानुभाव

विशेष : न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाएंगे

घर-घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश

धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी हमें भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित किये जाएंगे। धन्यवाद

श्री, समृद्धि, यश, वैभव, सुस्वास्थ्य व दीर्घायुष्य की दें
मंगलकामनाएं

जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, अथवा किसी विशेष उपलब्धि जैसे पावन अवसरों पर अपने परिजनों, मित्रों व शुभचिन्तकों को बधाई व शुभकामनाएं देना न भूलें।
आओ आर्यावर्त केसरी के माध्यम से ऐसे बधाई संदेश व शुभकामनाएं प्रकाशित कराएं...
और प्रदान करें
आर्यावर्त केसरी के प्रचार-प्रसार यज्ञ में 501/- की सहयोग रूपी पावन आहुति।
-सम्पादक (मोबा. : 9412139333)

ओ३म्
यज्ञ-योग और स्वाध्याय जीवन में अपनाएं - आर्यसमाज के साथ कदम से कदम बढ़ाएं
वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प को साथ लेकर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में
भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018
दिल्ली (भारत)
25 से 28 अक्टूबर 2018
सम्मेलन स्थल :- **स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-85**
विश्व शान्ति यज्ञ, योग व तपोनिष्ठ संन्यासियों, वैदिक विद्वानों द्वारा सत्संग
तथा प्रवचन का लाभ उठाने हेतु लाखों की संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनायें।
सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 9540029044
E-mail : aryasabha@yahoo.com, Website : www.aryamahasammelan.org, www.thearyasamaj.org
YouTube : thearyasamaj 9540045898